

आमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -25

जून - II - 2023



अंक - 06

माउण्ट आबू

Rs.-12

मूल्यनिष्ठ शिक्षा से ही भारत को विश्व गुरु बनाने की राह होगी आसान

‘आध्यात्मिकता द्वारा व्यापार एवं उद्योग में कुशलता’ पाँच दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन

ज्ञानसरोवर-मा.आबू। ब्रह्माकुमारीज व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा ज्ञानसरोवर परिसर में ‘आध्यात्मिकता द्वारा व्यापार एवं उद्योग में कुशलता’ विषय पर आयोजित पाँच दिवसीय

एवं तनाव से मुक्त रहने के लिए राजयोग का अभ्यास आवश्यक है। सियाराम सिल्क मिल्स लि. के मैनेजिंग डायरेक्टर रमेश पोद्दार ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज के आध्यात्मिक ज्ञान ने मेरे व्यक्तिगत जीवन में, मेरे सोचने के स्तर में अद्भुत व सुखद परिवर्तन लाया है। फ्यूचर ग्रुप के संस्थापक एवं सीईओ किशोर बियानी ने कहा कि निरंतर श्रेष्ठ करने



राष्ट्रीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका एवं ज्ञानसरोवर निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी ने कहा कि वर्तमान समय अनेक चुनौतियाँ हर वर्ग के सम्मुख हैं। ऐसे समय पर आप इस आध्यात्मिक ईश्वरीय ज्ञान का अपने जीवन में जितना समावेश करेंगे उतना ही आप स्वयं में हर परिस्थिति को पार करने की शक्ति अनुभव करेंगे। प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. योगिनी दीदी ने सभी को राजयोग का अभ्यास करार परमात्म अनुभूति कराई। उन्होंने कहा कि कार्यक्षेत्र में सहज सफलता प्राप्त करने

के लिए निरंतर प्रयास व एकाग्रता की आवश्यकता होती है। राजयोग मेडिटेशन इसमें बहुत मददगार साबित होगा। नागार्जुन फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स लि. हैदराबाद के चेयरमैन के.एस. राजू, वीराज प्रोफाइल्स लि. के सीएमडी नीरज कोचर, ओएनजीसी लि. के चेयरमैन अरुण कुमार सिंह, चन्द्रशेखर चोरे, ज्वाइंट म्युनिसिपल कमिशनर बीएमसी मुम्बई आदि ने भी विचार रखे। प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. गीता दीदी ने शब्दों द्वारा सभी का स्वागत किया। प्रभाग के कार्यक्रम संयोजक ब्र.कु. हरेश भाई ने प्रभाग की सेवाओं से अवगत कराया।

विश्व शांति सरोवर में ‘आध्यात्मिकता द्वारा प्रशासन में उत्कृष्टता’ महासम्मेलन जीवन को आध्यात्मिकता के साथ जीयें

जामठा-नागपुर(मह.)। ब्रह्माकुमारीज के प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा विश्व शांति सरोवर में प्रशासकों एवं कार्यपालकों के लिए ‘आध्यात्मिकता द्वारा प्रशासन में उत्कृष्टता’ विषय पर आयोजित महासम्मेलन में माउण्ट आबू से आये मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. प्रेम मसंद ने कहा कि दूसरों से तुलना करने के कारण हमारी खुशी गायब हो रही है, मन की बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं, जिसके कारण हमारा तन भी बीमार हो रहा है। अपने को मेडिटेशन से ठीक करें और आगे बढ़ें। उन्होंने मन की एक्सप्रेसराइज के साथ तन की भी एक्सप्रेसराइज करायी।



खान, एडमिनिस्ट्रेटिव जज इंडस्ट्रियल कोर्ट ने कहा कि हमें ऐसा काम करना चाहिए जिससे लोगों का विश्वास न्यायपालिका पर बना रहे। मध्य रेलवे

इस मौके पर...

ब्रह्माकुमारीज नागपुर विभाग की संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. रजनी दीदी को यूनिवर्सिटी ऑफ सेंट्रल अमेरिका से प्राप्त डॉक्टरेट डिग्री से मुम्बई से आये डॉ. राजकुमार कोल्हे द्वारा सम्मानित किया गया।

जीवन को अच्छी तरह जी सकें, उसी का नाम स्पीरिचुअलिटी है। प्रशासकों को निर्भय होना बहुत जरूरी है। यह गुण स्पीरिचुअलिटी से प्राप्त होगा। आध्यात्मिकता से जीवन में यथार्थ निर्णय की कला विकसित होती है जो आपको धोखा खाने से बचाएगी - राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, अध्यक्ष, प्रशासक सेवा प्रभाग, दिल्ली।

भोपाल की नेशनल कोऑर्डिनेटर राजयोगिनी ब्र.कु. अवधेश दीदी ने कहा कि कमजोरी को समाप्त करने के लिए सकारात्मकता को अपनाना होगा। यह सकारात्मकता हमें राजयोग से प्राप्त होगी। माउण्ट आबू से आये प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. हरीश भाई ने बताया कि यह प्रभाग पिछले तीस साल से सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है। यह संस्था समाज के सभी वर्ग के लिए अपनी सेवाएं प्रदान करती है। श्रीमति समीना

के.डी.आर.एम. तुषार कांत पांडे व रंगनाथ नायकडे, आईएफएस, चीफ कंज़रवेटर फॉरेस्ट (टेरीटोरियल) ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में सदीप पाटील, आईपीएस डीआईजीपी-गडचिरोली कैम्प नागपुर, सुधीर पाठक, ट्रस्टी माधव नेत्रालय एवं सीनियर वाइस प्रेसिडेंट महिन्द्रा एंड महिन्द्रा, श्रीकांत दुबे, वाइस प्रेसिडेंट एंड प्लांट हेड, महिन्द्रा एंड महिन्द्रा, प्रशांत बुर्डे, सुपरिटेन्डिंग इंजीनियर, महाराष्ट्र जीवन प्राधिकरण, गोविंद

प्रसाद उपाध्याय, वर्किंग डायरेक्टर, बी.वी.एस.एस., श्री आयुर्वेद कॉलेज एंड पकवासा हॉस्पिटल नागपुर, डॉ. अरविंद महल्ले, डीन एडमिनिस्ट्रेशन, रायसोनी इंजीनियरिंग कॉलेज, नागपुर, डॉ. समीर पिंगले, डायरेक्टर, सिम्बायोसिस सेंटर फॉर मैनेजमेंट स्टडीज, नागपुर, डॉ. शिल्पा खापरकर, जिला कल्याण अधिकारी, प्रशांत सवाई, डिप्टी डायरेक्टर, डायरेक्टर ऑफ टूरिज्म सहित अनेक प्रतिष्ठित लोग शामिल रहे एवं लाभ लिया।

‘विश्व पृथ्वी दिवस’ पर शांतिवन में भव्य कार्यक्रम

(हमारे पृथ्वी ग्रह में निवेश करें) (प्रेजर्व, प्रोटेक्ट, प्रमोट) कैम्पेन की राष्ट्रीय लॉन्चिंग

शांतिवन। वर्तमान समय में प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है। यह हम सभी के लिए चिंता का विषय है। ऐसी स्थिति में यदि पृथ्वी को संरक्षित करना है, प्रदूषण से बचना है तो लोगों की लाइफ स्टाइल में परिवर्तन जरूरी है। इसके लिए हमें ऐसे कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को जागरूक करना होगा। उक्त उद्गार विश्व

लाइफ स्टाइल में परिवर्तन लाना जरूरी : एसडीएम

पृथ्वी दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज संस्थान के शांतिवन परिसर में वैज्ञानिक, अभियंता एवं इंजीनियरिंग प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे (हमारे पृथ्वी ग्रह में निवेश करें), (प्रेजर्व, प्रोटेक्ट, प्रमोट) कैम्पेन के राष्ट्रीय लॉन्चिंग के अवसर पर आबू रोड के एसडीएम गोविंद सिंह ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति को आगे आकर प्रयास करना होगा। यह हम सभी की जिम्मेदारी है। वैज्ञानिक अभियंता एवं इंजीनियरिंग प्रभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष ब्र.कु. मोहन सिंघल भाई ने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए जी-20 प्रोग्राम चलाया जा रहा है। वसुधैव कुटुम्बकम



की थीम पर चलाए जा रहे इस प्रोग्राम का मकसद वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर है। यह तभी हो सकता है जब हम हमारे पृथ्वी ग्रह में निवेश करें। हम

मनुष्यों के साथ-साथ पशु, पक्षी, पेड़-पौधे और प्रकृति के सभी पांच तत्वों को परिवार मानें। प्रकृति का दोहन नहीं करें। संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका

कार्यक्रम में नर्सिंग स्कूल की छात्राओं ने नुक्कड़ नाटक पेश कर पृथ्वी का महत्व बताया

राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी ने कहा कि हम सभी को अब पर्यावरण बचाने के लिए गंभीर होने की जरूरत है। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. शीलू दीदी ने कहा कि जीवन में राजयोग को शामिल करने से हमारे मन का प्रदूषण दूर हो जाता है। जब मन स्वच्छ-सुंदर रहेगा तो हमारे कर्म भी स्वच्छ, सुंदर और सकारात्मक होंगे। इस मौके पर ब्र.कु. भारत भूषण भाई, ब्र.कु. डॉ. सविता बहन, ब्र.कु. देव्यानी बहन, ब्र.कु. सुप्रिया बहन ने भी विचार व्यक्त किये।

योगी के लिए तीन परहेज आवश्यक

जब शारीरिक रोग की दवा की जाती है तो स्वास्थ्य के लिए परहेज करना भी अति आवश्यक होता है क्योंकि परहेज के बिना पूरा निरोगी नहीं बन सकते। इसी तरह ही मानसिक रोगों को दूर करने के लिए जहाँ ज्ञान की दवाई है, तो वहाँ कुछ परहेज भी जरूरी हैं। जिसके बिना अवस्था ऊँची नहीं बन सकती। इनमें पवित्रता का पालन, अन्न दोष और संग दोष से मुख्य परहेज करना जरूरी है।

काम मनुष्य का महा शत्रु है क्योंकि इससे वह निर्बल बनता है। ब्रह्मचर्य का पालन मनुष्य का बहुत बड़ा स्वाभिमान है। वैसे भी कन्या को सौ ब्राह्मणों से श्रेष्ठ माना जाता है, उसकी पूजा की जाती है और घर में सब उसके चरण छूते हैं। परंतु विवाह के बाद उसका स्वाभिमान टूट जाता है। तब कोई उसके पांव नहीं छूता बल्कि वह स्वयं दूसरों के पांव छूने लग जाती है। यह आत्मा के निर्बल बनने का चिन्ह है। सभी धर्मों में अहिंसा को 'परम धर्म' और हिंसा को सबसे बड़ा पाप मानते हैं। परंतु यह कोई नहीं जानता कि सबसे बड़ी हिंसा काम कटारी चलाना है।



डॉ. क. गंगाधर

क्योंकि इससे आत्मा का हनन होता है। यह शारीरिक हत्या से भी बड़ी हत्या है। योगी बनने के लिए भोगी जीवन छोड़ना अर्थात् ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करना परमावश्यक है। काम के जीत लेने में अन्य सभी विकारों को जीतना सहज हो जाता है। मनुष्य आजकल के समय में ब्रह्मचर्य में रहना कठिन समझता है, परंतु ईश्वरीय ज्ञान और योग की शिक्षा के बल से इस व्रत का पालन सहज हो जाता है। ब्रह्मचर्य से योग में मदद मिलती है और योग से ब्रह्मचर्य का पालन सहज हो जाता है। यह भी एक अनुभव में लाई बहुत बड़ी सत्यता है।

विकारों की उत्पत्ति मन में होती है, अतः मन की पवित्रता बनाये रखने के लिए अन्न का शुद्ध एवं पवित्र होना जरूरी है। क्योंकि अन्न का प्रभाव मन पर पड़ता है। गीता में भी भोजन तीन प्रकार का माना गया है। सात्विक, राजसिक, तामसिक। योगी को सदा सात्विक भोजन लेने की ही आज्ञा है। इसलिए अंडा, मांस, मछली, शराब, सिगरेट, प्याज, लहसुन इत्यादि तामसिक वस्तुओं का सेवन उसके लिए निषेध है। चटनी, अचार, खटाई, लाल मिर्च, गरम मसाले इत्यादि राजसिक वस्तुएं भी जहाँ तक संभव हो, कम प्रयोग में लाने चाहिए। हल्का और सादा भोजन में दूध, फल और सब्जी का प्रयोग अधिक उपयुक्त है। अधिक और बोझिल भोजन करने से योग में सुस्ती, आलस्य, नींद इत्यादि का प्रभाव आ जाता है। इससे आगे और भोजन बनाने वाले के संस्कार भी भोजन खाने वाले के मन पर असर डालते हैं। अतः योगी को शुद्ध संस्कारों वाले मनुष्य के हाथों से बना हुआ भोजन ही खाना चाहिए।

'जैसा संग वैसा रंग'- यह उक्ति भी यथार्थ है क्योंकि बुरी संगत में आने से पुराने एवं अशुद्ध संस्कार पुनः जाग उठते हैं। इसलिए विकारियों की संगत बिल्कुल छोड़ देनी चाहिए। आज संसार में यत्र तत्र सर्वत्र माया रूपी रावण का ही राज्य है। सृष्टि की तमोप्रधान अवस्था है। ज्ञान का रंग बड़ी मुश्किल से चढ़ता है क्योंकि अज्ञानियों की संगत में जाने से उनके बुरे संस्कार तुरंत आ जाते हैं। यदि ऐसे बुरे मनुष्यों के साथ किसी कार्यवश रहना भी पड़े तो अपनी पूरी संभाल रखनी चाहिए। और शीघ्र वहां से चले जाना चाहिए। घर में गंदी तस्वीरें भी नहीं रखनी चाहिए। क्योंकि इनका मन और बुद्धि पर सूक्ष्म प्रभाव पड़ता है। जैसे हंस का बगुलों के साथ संग शोभा नहीं देता, वैसा ही योगी का भोगी के साथ संग शोभनीय नहीं है।

योगी को मूलतः इन तीन परहेज के साथ ज्ञान दवा का नियमित सेवन करना चाहिए। क्योंकि बिना परहेज दवा भी असर नहीं करती। इसीलिए ये तीनों ही योगी को अपने जीवन में अपनाना अति आवश्यक है। तब ही हम ऊँची स्थिति को पाते हैं और परम कर्तव्य का पालन करने में समर्थता आती है।

अन्तर्मुखता नहीं होगी तो त्याग-तपस्या भी नहीं होगी

बाबा द्वारा मिली हुई मीठी शिक्षाओं को धारण करने में अन्तर्मुखता बहुत मदद करती है। अन्तर्मुखता इशारा देती बाबा जो कहता है वह करना है। बाहरमुखता में याद करना पड़ता, अन्तर्मुखता याद की ओर खींचती है। हमारा पुरुषार्थ नैचुरल सहज हो जाता है। अन्तर्मुखी रहने से हमारे जीवन में दिव्यता और अलौकिकता नैचुरल दिखाई देती है।

अन्तर्मुखता का रस वैरागी बना देता है, उन्हें बाहर की कोई भी वस्तु अपनी ओर खींच नहीं सकती। बाहरमुखता वाले को अनेक बाहर के रस खींचते रहते हैं। ब्राह्मणों में हम सर्वोत्तम कुल भूषण बनें, जब यह अटेन्शन रहता है तब जीवन में दिव्यता और अलौकिकता दिखाई देती है।

ब्राह्मण बनने से जीवन में पवित्रता आ गई। आहार-व्यवहार सब चेंज हो गया। बाहर वालों की भेंट में जीवन में परिवर्तन आ गया। लेकिन बाबा की भेंट में कहेंगे अभी इसका पुरुषार्थ साधारण है। तो क्या परिवर्तन चाहिए? जीवन में दिव्यता और अलौकिकता हो। संगमयुगी ब्राह्मण बने, पतित विकारी जीवन से निकल आये यह बहुत

अच्छा लेकिन ब्राह्मण सो देवता बनने के लक्षण हमारे में आ जायें, वो संस्कार दिखाई पड़ें।

ऊंचे ते ऊंचा बाप हमें ऊंचे ते ऊंचा बनाता है। इस बात को ख्याल में रखें तो हमसे कोई भी ऐसी बात हो नहीं सकती। जब हम अन्तर्मुखी होंगे तब ही ऐसी चेकिंग हो सकती है। हम

जितना हम आगे बढ़ते रहेंगे उतना परीक्षायें आती रहेंगी, लेकिन परीक्षा शब्द भी क्यों? यह बड़ी बात नहीं है। बाबा पढ़ा रहा है, हम पढ़ रहे हैं, जो करेगा सो पायेगा- यह शब्द भी नहीं कह सकते। यह भी जैसे अन्दर से खराब शब्द बोलना है। अन्दर से जानते हैं हर एक के कर्म का हिसाब-किताब

एक को सच्चे प्रेम का अनुभव करायेगे। अगर हम लों को तोड़ देते हैं तो प्यार मिल नहीं सकता। मर्यादा पुरुषोत्तम बनने की शिक्षाओं पर हम नहीं चलते हैं तो लव नहीं मिलता। प्रेम भी रूखा-रूखा नहीं, लेकिन रिगार्ड सहित प्रेम हो।

जिसने अपने पुरुषार्थ की लेवल अच्छी रखी है उनसे औरों को प्रेरणा मिलती है। हमारा बोलचाल, पुरुषार्थ साधारण न हो। हमारा लक्ष्य क्या है, यह अन्तर्मुखी होकर हम सोचें। सदा आगे बढ़ने की भावना हो। जब बाबा खींच रहा है तो कोई बात मुझे रोक नहीं सकती। पुरुषार्थ में याद का बल हो। मुख से कुछ न कहकर अन्दर से याद की सच्ची लगन हो। तो जो होना चाहिए वही होगा। अन्दर शुद्ध संकल्प की दृढ़ता हो।

अन्तर्मुखता नहीं होगी तो त्याग तपस्या भी नहीं होगी। ऐसे ही चलते रहेंगे। हम जो चाहते हैं और बाबा जो चाहता है वह हमारे से मिस न हो जाये, यह ध्यान रखना है, इसलिए साधारण पुरुषार्थ न हो। जो लक्ष्य मिला है, उसे प्राप्त करने का पुरुषार्थ हो।



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

जो ईश्वरीय कायदे में चलते हैं, कुदरती लवफुल बन जाते हैं। वे हर एक को सच्चे प्रेम का अनुभव करायेगे। अगर हम लों को तोड़ देते हैं तो प्यार मिल नहीं सकता।

अपना सच्चा चार्ट तब ही रख सकते जब अन्तर्मुखी हैं। बाहरमुखता छोटी-छोटी बातों के प्रभाव में खींच लेती है। अन्तर्मुखता इनसे मुक्त रखती है। अन्तर्मुखता हमें मजबूत कर देती है। देखते हुए भी नहीं देखते। उनकी अटैचमेन्ट छूट जाती है।

हम और ही सीखते हैं, मैं ऐसी गलती न करूँ। उनसे नफरत नहीं आती, लेकिन हम सावधान हो जाते हैं। ब्राह्मणों को लों फुल बनकर रहना है। लों पर चलने से लव पैदा हो जाता है। जो ईश्वरीय कायदे में चलते हैं, कुदरती लवफुल बन जाते हैं। वे हर

अपने ऊंचे स्वमान में रहो तो हर समस्या व विघ्न तोहफा बन जायेगा

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

सभी को रूहानी नशा व स्मृति रहती है कि हमारे जैसा भाग्य तो देवताओं का भी नहीं है, भले हम ही जाकर देवता बनेंगे। सारे कल्प में संगमयुग ही विशेष युग है। संगमयुग में ही बाबा आकर हमें बाप, टीचर, सतगुरु के रूप में मिलता है। सतयुग में ब्रह्मा बाबा हमारे साथ ही होंगे परन्तु शिवबाबा साक्षी होकर देखेंगे। ब्राह्मणों को सदा चोटी पर दिखाते हैं। चोटी क्यों दिखाते हैं? क्योंकि ऊंच ते ऊंच प्राप्तियाँ एवं ऊंच ते ऊंच स्वमान हमें अभी बाप द्वारा मिलते हैं। जैसे ऊंच ते ऊंच भगवान है, ऐसे ही हम बच्चे भी ऊंच ते ऊंच ही हैं। आप सभी बाबा की आशाओं के दीपक हो ना! वैसे राजा बनना कोई बड़ी बात नहीं है परन्तु अभी हरेक बच्चा अपने मन, बुद्धि व संस्कारों का राजा बने। दादी ने भी वतन में बाबा को बताया कि "मेरा यह लक्ष्य रहा कि मेरा पुरुषार्थ निर्विघ्न व निर्विकल्प रहे"।

आप हरेक के प्रति शुभ भावना व शुभ कामना रखो, अपने स्वमान में रहो तथा निर्विघ्न व निर्विकल्प रहो। तूफान तो आयेंगे ही परन्तु ऐसा पुरुषार्थ करो कि तूफान तोहफा बन जाये। जैसे राजा के पास कन्ट्रोलिंग व रूलिंग पॉवर होती है। अतः कोई भी समस्या आए, विघ्न आए, विकल्प आए, ये सब उसके आगे एक बच्चा है अतः उन पर विजय प्राप्त करनी है। कई बच्चे कहते हैं दादी जी आपको क्या पता बात ही ऐसी थी, ऐसी समस्या तो कभी आई ही नहीं। अरे, आप भगवान के बच्चे मास्टर भगवान, तो भगवान से

भी कोई बात ऊंची होती है क्या? जैसे हम हवाई जहाज में यात्रा करते हैं तो पहाड़ आदि सब चीजें छोटी दिखाई देती हैं। इसी प्रकार हम भगवान के बच्चे हैं, राजा हैं तो हर समस्या, विघ्न, पुराने संस्कार छोटे दिखाई देंगे। बाबा की हम बच्चों से आश है कि ये पुराने संस्कार न रहें बल्कि अनादि व आदि संस्कार इमर्ज हो जायें।

कई जो अचानक शरीर छोड़कर चले गये हैं बाबा उन्हें वतन में इमर्ज कर मिलाता है और उन्हें देखकर तरस पड़ता है जब वे कहते हैं कि हमने उस समय पुरुषार्थ क्यों नहीं किया? अन्त समय दो लाइन लगेगी। एक पश्चाताप की और दूसरी प्राप्ति वालों की। जब प्राप्ति वाले के आगे पश्चाताप वाला आयेगा तो उसका क्या हाल होगा? अभी तो कई बच्चे खाने-पीने आदि में मस्त हैं। कई कहते हैं कि वह महारथी भी गलती कर रहे हैं। अच्छा महारथी ने गलती की तो उस समय वह महारथी कहाँ रहा? यदि महारथी की स्टेज होती तो गलती ही नहीं होती। अभी देखो किसी के स्वप्न में था कि दादी जी चली जायेंगी! अभी कोई भी कभी जा सकता है, समय बदल गया है। जैसे जब मकान बनाते हैं और सेन्टर पक्का हो जाता है तो बल्लियों आदि का सहारा निकाल देते हैं। इसी प्रकार जब हम सम्पन्न हो जायेंगे तो जो महारथियों की गलतियों की लाठियों के सहारे लिए हुए हैं उन्हें निकाल दो। बाबा-बाबा कहते अपने पर अटेन्शन रखो।

ज्वालामुखी स्थिति द्वारा दूसरों को रोशनी दो

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा ने कहा दान वो करता है जो श्रीमत पर चलता है। दानी, महादानी, फिर वरदानी। पहले बने दानी, जिसको दानी बनने की आदत पड़ जाती है वो फिर छिप के भी दान करता है। आवाज में नहीं आता है। गुप्त का महत्त्व समझता है। ज्ञान भी गुप्त, योग भी गुप्त, फिर धारणा भी है गुप्त। ज्ञान बाबा ने दे दिया है, यह सच है, यह झूठ है। यह पाप है, यह पुण्य है। बाबा आपने मुझे यह बताया किसी और ने नहीं बताया। ज्ञान मिला माना समझ आई, योग लग गया। अगर बुद्धि और बातों में फंसी होगी तो योग लगेगा नहीं।

अभी भी सभी जगह आधे लोगों को क्लास में नींद आ जाती है। क्लास में नींद आना, सिर भारी होना, योग न लगना, यह फल है। अगर अपने आप को आँख नहीं दिखायेंगे तो कमजोरी दिखाई नहीं देगी इसलिए बाबा कहता है अपना मास्टर स्वयं बनो। मैं आपकी सब बातें जानता हूँ, पर तुम मेरा बच्चा समझकर अपने को चेक करो। दूसरे के बारे में सारी बातें पता होंगी, पर मेरे में क्या कमजोरी है- यह नहीं पता रहेगा। मेरे में क्या है, जब तक यह नहीं समझा है, तो सिर भारी रहेगा। बाबा खुशी से याद आये, मैं याद न करूँ पर वो स्वयं सामने आ जाये। वो तब होगा जब धारणा पर ध्यान होगा। ज्ञान-योग फिर आ गयी धारणा अर्थात् जीवन। जीवन हमारी आज्ञाकारी है, वफादार है, ईमानदार

है। ऐसा गुप्त पुरुषार्थी, सच्चा पुरुषार्थी है, सच्चे की लगन लगी हुई है। ज्वालामुखी स्थिति हमारी ऐसी हो जो दूसरे को रोशनी मिले। जीवन गुणों में सम्पन्न हो, सदा ही चढ़ती कला से औरों का भला होता रहे। कहाँ किसी हालत में रुकती कला हुई नहीं है, न कोई रोक सकता है। रोकने वाले रोकेंगे, पर जाने वाला सच की नईया में बैठकर जा रहा है।

बाबा ने सच्चा बनना हमको सिखाया है। सच्चा उसको अच्छा लगता है। सच की इतनी वैल्यू हो, जिसके पास सच की वैल्यू है उसमें शक्ति आती है मायाजीत बनने की। अभी भी आँखें नहीं खुलेंगी तो जब धर्मराज सामने आयेगा तब तो आँखें खुलेंगी, वरदाता ने वरदान दे दिया। ब्रह्मा बाप भी कहेगा मात-पिता, शिक्षक, सखा सब पार्ट पूरा कर दिया। अभी तुम अपने सत्य धर्म में रहो, शान्त रहो, सच्चाई से आती है। ईश्वरीय सेवा है, सबका भला होने वाला है, हुआ ही पड़ा है। मुझे क्या करना है, धारणा में सच्चाई इतनी जो औरों को बल मिले। मास्टर बनकर अपनी इतनी चेकिंग करनी है। मेरे में कोई कमी न हो। मैं आत्मा साक्षी बनकर, देह से न्यारी रहूँ। जो सच्चा है उसे कोई चिन्ता नहीं, उसको कोई सबूत नहीं चाहिए। भगवान उसका सबूत देता है फिर दुनिया देती है।



मयूरभंज-ओडिशा। ब्रह्माकुमारीज के 'एडिक्शन फ्री ओडिशा' डी-एडीक्शन कैम्पेन का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू। साथ हैं राज्यपाल प्रो. गणेशी लाल, राजयोगिनी ब्र.कु. कमलेश दीदी, ब्र.कु. सुप्रिया बहन, ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह तथा ब्र.कु. नथमल भाई।



एंटीगुआ-बरबुडा। एंटीगुआ और बरबुडा के प्रधानमंत्री गैस्टन अलफान्सो ब्राउन से उनके ऑफिस में मुलाकात कर आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् उनके साथ हैं राजयोगी ब्र.कु. आत्म प्रकाश भाई, माउण्ट आबू, एंटीगुआ और बरबुडा में ब्रह्माकुमारीज की नेशनल कोऑर्डिनेटर राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. पायल बहन तथा अन्य।

भगवान तो वायदा निभाता ही है... परंतु हम...

जिसने भी बाबा को कहा, बाबा, मैं आपका साथ नहीं छोड़ूंगा और सचमुच उसको निभाने की कोशिश करता हूँ तो उसको बाबा ने भी कभी नहीं छोड़ा, उसको पूरा साथ दिया और साथ देता भी है। ऐसे बहुत-से मिसाल हमने देखे हैं। जब हम बच्चे भगवान का हाथ और साथ नहीं छोड़ते तो वह सर्वशक्ति मान परमपिता अपने बच्चों का साथ और हाथ कैसे छोड़ेगा?

ब्रह्माकुमार-कुमारियों का आवाज है, बाबा, हम आपका साथ नहीं छोड़ेंगे। इसके उत्तर में बाबा ने क्या कहा होगा? जब आत्मा अपने पिता परमात्मा से कहती है कि बाबा हम आपका हाथ नहीं छोड़ेंगी, तो परमात्मा ने क्या कहा होगा? उसने भी कुछ कहा होगा ना! कुछ कारण बन जाता है तो मनुष्य हाथ और साथ दोनों छोड़ देते हैं। लेकिन बाबा, जो परमपिता परमात्मा है वो हमारी यह आवाज सुन रहा है। तो वो क्या कहते होंगे? उनका मुखारविंद कैसा दिखाई पड़ता होगा! वे भी कहते होंगे, हाँ बच्चे, मेरे पीछे बच्चे, मेरे सिकीलधे बच्चे, मैं भी आपका हाथ नहीं छोड़ूंगा। जब हम उसका साथ नहीं छोड़ेंगे तो वो कैसे हमारा साथ छोड़ सकता है? भक्तिमार्ग में हम उसको अर्जी डालते रहे, चिट्ठी लिखते रहे लेकिन उत्तर नहीं आता था। प्रार्थना करते रहे परन्तु कोई जवाब नहीं मिलता था। भगवान से प्रार्थना करना ही उसको अर्जी लिखना है। क्यों? क्योंकि उसका परिचय ही हमें नहीं था।

लेकिन अब संगमयुग में बाबा का तुरन्त उत्तर मिलता है। उसको सुनने की शक्ति चाहिए। आप उसकी तरफ ध्यान दो तो उसकी आवाज भी सुनायी पड़ती है कि पीछे बच्चे, मैं भी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूंगा। लेकिन उसकी आवाज सुनने की योग्यता चाहिए। बाबा तत्काल जवाब देते हैं कि बेटे, लाडले बच्चे, सिकीलधे बच्चे, मेरे विशेष बच्चे, सेवाधारी बच्चे, मैं भी आपका साथ नहीं छोड़ूंगा। आता है सुनने में? इसीलिए कहते हैं भीतर के पट्टे खोल। भीतर की आँख को तीसरा नेत्र कहते हैं। उस नेत्र को खोलना ही चाहिए। शिव बाबा का धाम, नाम, रूप क्या है- यह देख नहीं सकते। तीसरे नेत्र के साथ तीसरा कान भी खुलना चाहिए। लोग तीसरे नेत्र के बारे में कहते हैं लेकिन तीसरे कान के बारे में नहीं जानते। उस तीसरे कान से, भगवान क्या कह रहा है वो सुनाई पड़ता है। हमने तो रिसीवर ही बन्द करके रखा है। वह बच्चों को फोन पर कुछ बताना चाहता है, कुछ बात करना चाहता है कि मेरे बच्चे कठिनाई में हैं उनको उससे

मुक्त होने की युक्ति बताऊँ। लेकिन बच्चों ने टेलिफोन के रिसीवर का स्विच ही बन्द करके रखा है। तो क्या करें? हम बच्चे कहते हैं, बाबा हमें मदद करो, हम मुश्किल में हैं। वह हमारी प्रार्थना सुन रहा है, वह जवाब देना भी चाहता है कि बच्चे क्या करें। लेकिन हमने अपने मन को व बुद्धि को उसकी तरफ नहीं रखा है। कहीं



**राजयोगी ब्र.कु.
जगदीशचन्द्र हसीजा**

और व्यस्त हैं हम। अपने टेलिफोन को दूसरों को फोन करने में बिजी रखा है। लाइन फ्री नहीं रखी है तो जवाब कैसे मिलेगा? जब हम भी कहते हैं, बाबा, हम आपका साथ नहीं छोड़ेंगे और बाबा भी कहते हैं, बच्चे, मैं भी आपका साथ नहीं छोड़ूंगा तो इसका परिणाम क्या होगा? आप जानते हैं? जब भगवान किसी का साथ दे और वह भी भगवान का साथ न छोड़े तो उसका परिणाम क्या होगा? उस व्यक्ति की आश अथवा मनोकामना पूरी होगी।

साथ और हाथ न छोड़ने का और जोड़ने का अर्थ क्या है? साथ छोड़ा कैसे जाता है और जोड़ा कैसे जाता है? यह सब सूक्ष्म बातें हैं। यह स्थूल की बात नहीं। कहते हैं दो रामायण हैं। एक है रामायण और दूसरा है अध्यात्म

रामायण। राम था, उसकी सीता थी, एक दिन रावण आया, सीता को उठाकर ले गया। राम-रावण की लड़ाई हुई आदि-यह है रामायण। संगमयुग में बाबा आकर बच्चों को बताता है कि राम कौन है, रावण कौन है, सीता कौन है, उनका आध्यात्मिक अर्थ क्या है- यह है अध्यात्म रामायण। इसी प्रकार, बाबा आकर हमें यह बताते हैं कि साथ छोड़ने का और साथ जोड़ने का आध्यात्मिक अर्थ क्या है। साथ चलना माना साथ-साथ चलना। एक के बगल में चलना। एक-दूसरे के पीछे भी नहीं चलना, साथ-साथ चलना। एक-दूसरे का मददगार होकर चलना। बाबा का साथ होगा तो हमारे ऊपर माया का वार नहीं होगा। अगर किसी के ऊपर वार हो भी जायेगा तो बाबा हमारे साथ हैं, वह बचायेगा, मदद करेगा। अगर कोई आत्मा किसी धोखे से माया के वश हो भी जाये तो बाबा का भी फर्ज बनता है कि अपने बच्चे की रक्षा करे, मदद करे। करता है, जरूर करता है और की है। माया के वश हुए उस बच्चे को बाबा ने पत्र लिखा, फोन किया, किसी-न-किसी बच्चे को उसके पास भेजकर अपने पास बुलाया, दुबारा ऊपर उठने के लिए उमंग-उत्साह भरा। बाबा ने उनको छोड़ा नहीं है। जिसने भी बाबा को कहा, बाबा, मैं आपका साथ नहीं छोड़ूंगा और सचमुच उसको निभाने की कोशिश करता हूँ तो उसको बाबा ने भी कभी नहीं छोड़ा, उसको पूरा साथ दिया और साथ देता भी है। ऐसे बहुत-से मिसाल हमने देखे हैं। जब हम बच्चे भगवान का हाथ और साथ नहीं छोड़ते तो वह सर्वशक्तिमान परमपिता अपने बच्चों का साथ और हाथ कैसे छोड़ेगा? यह हमारा, भगवान के साथ का एग्रीमेन्ट (समझौता) है। यह सामान्य एग्रीमेन्ट नहीं है जो पेपर पर लिखा रहता है। वह तो कभी गुम भी हो जाता है। यह तो आत्मा और सर्वशक्तिमान परमात्मा के साथ का एग्रीमेन्ट है। यह अविनाशी आत्मा का अविनाशी परमात्मा के साथ का एग्रीमेन्ट है। इसको पूरा किया जायेगा और अन्त तक रहेगा अगर आपने दिल से कहा है तो।



मुम्बई-कर्जत(घाटकोपर सब जॉन)। ब्रह्माकुमारीज के स्थानीय सेवाकेन्द्र की ओर से माननीय सार्वजनिक बांधकाम मंत्री रविंद्र चव्हाण का शॉल पहनाकर सम्मान करते हुए ब्र.कु. डॉ. कीर्तिमाला बहन। साथ ही माननीय मंत्री को पुष्पगुच्छ श्रीफल एवं प्रसाद भी भेंट की गई तथा उनके साथ सौहार्दपूर्ण वार्ता करने के पश्चात् ब्रह्माकुमारीज के मुख्यालय माउण्ट आबू में आने का निमंत्रण भी दिया गया। इस अवसर पर अभिनव ज्ञान मंदिर के अध्यक्ष नाना वैद्य, कर्जत मंडल अध्यक्ष मंगेश म्हात्रे, शहर अध्यक्ष नगरसेवक बलवंत घुमरे, युवा मोर्चा के अभिषेक तिवारी व अन्य गणमान्य अतिथियों सहित ब्र.कु. डॉ. नितिन भोपतराव, किरण भोईर, संतोषी बहन, ऋषभ भाई आदि उपस्थित रहे। साथ ही इस मौके पर अपने जीवन के 100 वर्ष पूर्ण करने पर विद्या माताजी का मंत्री महोदय द्वारा सम्मान किया गया तथा ब्रह्माकुमारीज की ओर से भी शतायुषी विद्या माता को शॉल श्रीफल एवं ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित किया गया।



मुम्बई-अंधेरी। हॉलिडे इन, फाइव स्टार होटल में आयोजित पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में विश्व प्रसिद्ध ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज ब्रेट ली के हस्तों से भारत के प्राचीन राजयोग का प्रसार व प्रचार करने के लिए डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके को 'इंडियन ब्रांड आयकॉन अवॉर्ड्स 2023' से सम्मानित किया गया। इस मौके पर विलेपार्ले सेवाकेन्द्र से ब्र.कु. प्रीति बहन भी उपस्थित रहे।



रीवा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के शांति धाम सेवाकेन्द्र में नशा मुक्त भारत अभियान के तहत आयोजित 'प्रतिज्ञा' कार्यक्रम में सभी ने नशा मुक्त भारत बनाने में अपना सहयोग देने की प्रतिज्ञा की। इस मौके पर डिवाइन पैथोलॉजी के द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में लायंस क्लब रीवा ग्रेट के संरक्षक हाजी एके खान, मध्य प्रदेश पुलिस विभाग में टीआई गया प्रसाद अहिरवार, ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, ब्र.कु. लता बहन, ब्र.कु. नम्रता बहन, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. नेहा बहन, एसडीओ सीपी मालवीय, प्राचार्य दीपक तिवारी, एसबीआई प्रबंधक सचिन जी, डिवाइन पैथोलॉजी के संचालक ब्र.कु. उमेश कुमार यादव तथा उनकी 15 सदस्यों की टीम सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।



वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी
ब्र.कु. गीता दीदी, माउण्ट आबू

सम्पूर्णता की मदद हमको बाबा को देनी है

जरा सोचें...

एक बार बड़ी दीदी ने हमें बताया था। बड़ी दीदी से पूछा कि आप लोग तो कॉन्सटेंट एक के बाद एक कार्य में बिजी रहते हैं तो बाबा को कब याद करते हैं। तो बड़ी दीदी ने बड़ा अच्छा बताया था कि एक पार्टी से मिलती हूँ, वो जाती है फिर दूसरी से मिलती हूँ उस बीच में मैं फिर से अपने आप को बाबा से जोड़ लेती हूँ। ये भी मैंने बहुत प्रैक्टिस किया। कोई मिलने आते हैं तो मैं और अन्दर से डिटेच हो जाती हूँ। अन्दर से और न्यारा हो जाना या आत्म स्मृति में या जो हमारे स्वमान, टाइल बाबा ने दिए हैं वो याद करना। बाबा भी देखो ज्ञान में आये पहले सबको कमल फूल बनाया। कितनी बार बाबा कहते हैं भल घर में रहो पर कमल फूल समान बनो। कमल की क्या विशेषता है डिटेचमेंट, न्यारापन फिर बाबा ने आगे बढ़ाया कि कितने भी सतकर्म करो सेवा करते हैं ना हम सब तन-मन-धन लगाते हैं, मन-वचन-कर्म लगाते हैं कितने भी सतकर्म करो, ट्रस्टी (निमित्त)। श्रीमत पर कारोबार करते हैं।

ट्रस्टी सबकुछ करता है पर मालिकपन नहीं आता है। हमें सबकुछ करना है पर मालिक बाबा है। तो मालिक के नियमानुसार करना होता है ना, तभी ट्रस्टी कहा जाता है। और अब फरिश्ते। सतकर्मों में भी, करते हुए भी आसक्ति नहीं। ऊपर की ऊंची लाइट-माइट की स्थिति है। अब बाबा कहते हैं खुद को क्या समझो फरिश्ता। कितना भी महान बन जायें, आगे बढ़ जायें, अनन्य हो जायें, सर्विसएबुल बन जायें परन्तु न्यारापन। कितना भी महारथी बन जायें परन्तु मैं बाबा का बच्चा हूँ कोई अभिमान नहीं। और अभिमान न रहने की निशानी बड़ी दादी ने हमें बताया निमित्त भाव, निर्मान भाव। मैंपन तो क्या बहस करना भी नहीं आयेगा आपके जीवन में। निर्मान भावना और निर्मल वाणी। अहंकार नहीं आयेगा। वाणी में अहंकार नहीं आयेगा। कितना भी सहयोगी बन जायें दिखावा नहीं आयेगा। बाबा ने मौका दिया हमारे तन-मन-धन को सफल करने, बाबा कहते हैं ना कि कभी संकल्प में भी न आवे

कि दिया। जानते हैं पदम गुणा रिटर्न मिलना है तभी तो बाबा पर बलिहार जा रहे हैं। यज्ञ में कोई चीज लाकर दी, दे दिया माना हमारा कोई अधिकार नहीं। फिर सोचना नहीं है जो अलमारी दी थी वो कहाँ गई दिखाई नहीं देती। बहन जी ने बेच दी या क्या किया? नहीं। इसका मतलब हमने अभी तक पकड़ के रखा है, तो जमा तो हुआ ही नहीं। सफल किया

बाबा का सत्य ज्ञान महत्वपूर्ण है वो हमें प्रत्यक्ष करना है। तो जितना आत्मभिमान का मैंपन और मेरापन प्रैक्टिस में लायेंगे वो देह भान का मैं और मेरापन खत्म होता जायेगा।

पर जमा नहीं हुआ। ये दो हिसाब अलग-अलग हैं। बाबा के कार्य में, सेवा में लगाना सफल करना है। पर अगर बुद्धि में चला, वर्णन किया बार-बार भई ये पंखे आपको पसंद आये? कहेंगे हाँ बहुत अच्छे हैं। तो हम कहेंगे मैंने लगवाये थे। इसलिए बाबा कहते हैं जमा कितना होता है और माइनस कितना होता है मैंपन और मेरापन करने से। इतना सत्य ज्ञान देने के बाद भी बाबा ने हमारे पर अधिकार नहीं किया। गीता में भी सबकुछ कह दिया लेकिन उसके बाद भी अर्जुन डिसकस करता रहा, आग्यमूमेंट (बहस) करता रहा। तो भगवान ने क्या कहा 'यथेच्छसि तथा कुरु' तुमको जो चाहिए वो करो। मैंने अपना कार्य कर दिया। बाबा ने हमें कभी कुछ भी नहीं कहा।

एक बार प्रोग्राम में एक मेहमान हमें कहने आये कि ये आये हुए मेहमान कितना भोजन फेंकते हैं आप लोग क्यों नहीं इन लोगों को कहते हो। तो हमने कहा कि पहले ही दिन हरेक की फाइल में सूचनाओं का कागज होता

है, सबको सूचना दे दी जाती है। उसके बाद भी क्लास में एनाउन्स किया जाता है। आपके घर कोई मेहमान ऐसा करे तो आप लड़ेंगे थोड़े उनके साथ! समझायेंगे। बाबा हमें रोज बार-बार समझाते हैं। दादियों को हम सबने देखा है तो ये हरेक की अपनी जागृति हो कि मुझे देह भान का मैंपन और मेरापन नहीं लाना है। बाबा ने एक बार कहा था कि बच्चों का मैंपन और मेरापन ही प्रत्यक्षता के होने में पर्दा हो जायेगा।

आयें हैं बाबा को प्रत्यक्ष करने और लगे हैं अपनी प्रत्यक्षता करने। हमें अपनी प्रत्यक्षता नहीं करनी है बाबा की प्रत्यक्षता करनी है। बाबा का नाम बाला करना है। यज्ञ का नाम बाला करना है। यज्ञ का नाम रोशन करना है। हमें व्यक्तिगत अपनी महत्ता नहीं बढ़ानी है। बाबा,

बाबा का सत्य ज्ञान महत्वपूर्ण है वो हमें प्रत्यक्ष करना है। तो जितना आत्मभिमान का मैंपन और मेरापन प्रैक्टिस में लायेंगे वो देह भान का मैं और मेरापन खत्म होता जायेगा। और इस आत्मभिमान की स्थिति में, बाबा की याद में इतना सुख और आनंद अनुभव होता है और अपने आप हमारे अन्दर वो अलौकिकता, रूहानियत आती है कि हम गुप्त रहकर भी प्रत्यक्ष हो जाते हैं। अपने आप अनुभव होता है लोगों को। हमें देखें तो बाबा याद आवे, हमें देखें आत्मभिमान बन जाये, व्यक्त भाव वाला अव्यक्त हो जाये। यही तो सेवा करनी है हमें। हमें अपने आप से पक्का करना है कि बाबा ने जो कहा है वो बनना है या नहीं बनना है। अब बाबा को हमसे कौन-सी मदद चाहिए? हमारी स्थिति की मदद चाहिए। करना है ना! अब बाबा को जो मदद चाहिए वो मुझे करनी है। हमारी स्थिति की मदद, हमारी सम्पन्नता की मदद, हमारी सम्पूर्णता की मदद चाहिए।



धमतरी-छ.ग. शहर के वंदना विहार कॉलोनी, रत्नबंधा रोड पर ब्रह्माकुमारीज के नये सेवाकेन्द्र के लिए ली गई भूमि का गांधी नगर गुजरात से आई राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी के मुखारविंद द्वारा 'शिव सरोवर' नामकरण किया गया। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में महापौर नगर पालिका निगम विजय देवांगन, श्रीमति रंजना दीपेन्द्र साहू, विधायक विधानसभा क्षेत्र, मोहन लालवानी, दिव्यांग सलाहकार बोर्ड, मदन मोहन खंडेलवाल, सदस्य जीव जंतु कल्याण बोर्ड, हर्षद मेहता, पूर्व विधायक धमतरी विधानसभा क्षेत्र, राशि पवार, जिलाध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी, कविंद्र जैन, महामंत्री भाजपा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता बहन तथा शहर के अनेक विशिष्ट जन, संस्थाओं के पदाधिकारी गण, सामाजिक संगठनों के सदस्य गण सहित 800 लोग उपस्थित रहे।



मालिया-हाटीना(गुज.) ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र के 32वें वार्षिकोत्सव में दीप प्रज्वलित करते हुए सामाजिक कार्यकर्ता महेन्द्र भाई गांधी, मेडिकल ऑफिसर रवि भाई सामता, समर्पण हॉस्पिटल के ट्रस्टी कृष्णकांत देवाणी, ब्र.कु. मीता बहन, ब्र.कु. रूपा बहन तथा अन्य।



For Online Transfer

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO:- 7482096871
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- After Transfer send detail on

E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org

E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक - 240 रुपये, तीन वर्ष - 720 रुपये, अजीवन - 6000 रुपये

Website: www.omshantimedia.org



मुम्बई-घाटकोपर। ब्रह्माकुमारीज के योग भवन, घाटकोपर सबजोन द्वारा 'नशा मुक्त भारत अभियान' के अंतर्गत घाटकोपर रेलवे स्टेशन पर आयोजित दो दिवसीय प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी, अति.निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज, मुम्बई घाटकोपर सबजोन, रेलवे स्टेशन के स्टेशन मास्टर एवं रेलवे पुलिस फोर्स के मुख्य अधिकारी। 1200 से अधिक लोगों ने प्रदर्शनी का लाभ लिया एवं 400 से अधिक लोगों ने राजयोग प्रशिक्षण में शामिल होने के लिए अपना नाम दर्ज किया।



नरसिंहपुर-म.प्र. ब्रह्माकुमारीज के संस्कार भवन सेवाकेन्द्र द्वारा विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर 'धरती के लिए निवेश' कार्यक्रम में इंजीनियर राजेश बरडिया, इंजी. मनीष जैन, इंजी. अरविंद शुक्ला, इंजी. वरुण भार्गव, इंजी. निशा सोनी, इंजी. के.के. सोनी, इंजी. मोहित जैन, इंजी. सत्येंद्र व्यवहार, इंजी. कृष्ण कांत साहू, इंजी. अंशु सोनी, इंजी. प्रहलाद प्रजापति, इंजी. शंकरलाल कुर्मी, इंजी. साकेत नगरिया, इंजी. इंद्रेश कौरव व शहर के अन्य इंजीनियर्स व गणमान्य अतिथियों सहित राजयोगिनी ब्र.कु. कुसुम बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।



सुन्नी-शिमला(हि.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी स्नेह मिलन के पश्चात् ब्र.कु. शकुंतला बहन, ब्र.कु. रेवादास भाई एवं ब्र.कु. प्रकाश भाई को इश्वरीय सौगात भेंट करते हुए।



शांतिवन। राजयोगिनी ईशु दादी के द्वितीय पुण्य स्मृति दिवस पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करने के पश्चात् संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी के साथ उपस्थित हैं वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. उषा दीदी, राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल भाई तथा अन्य भाई-बहनें।



**राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका**

मनुष्य की आत्मा मनुष्य योनि में ही जाती है भोगना कौन भोगता... मनुष्य या पशु-पक्षी...!!!

कर्म और फल एक-दूसरे के पूरक हैं। इसीलिए व्यक्ति चाहे अपनी चालाकी से कहीं से छूट भी जाए लेकिन अपने कर्मों से कभी छूट नहीं सकता है। शास्त्रों के अंदर यह बात आती है कि मनुष्य जैसा कर्म करेगा वैसी योनि में उसको जाना पड़ेगा। अपने फल को भोगने के लिए पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े आदि कितनी योनियों में जाना पड़ता है। 84 लाख योनियों से गुजर कर लास्ट में उसको मनुष्य जीवन प्राप्त होता है। अब इस बात को अच्छी तरह से हम समझें कि मान लो कि एक व्यक्ति ने बुरा कर्म किया और उसके फलस्वरूप कर्म का फल भोगने के लिए उसको 84 लाख योनियों से गुजरना पड़ा। लास्ट में उसको मनुष्य जन्म मिलता है इसलिए कहते हैं मनुष्य जन्म अति दुर्लभ है। लेकिन सोचने की बात तो यह है कि मान लो मैंने कोई बुरा कर्म किया इसलिए मुझे पशु योनि में जाना पड़ा अब पशु योनि में अगर गई तो अपना कर्म का फल भोगने के लिए कहते हैं, मान लो व्यक्ति ने कोई हिंसक कर्म किया तो उसको हिंसक योनि मिलेगी, कोई बिल्ली की तरह चोरी करके दूध पी जाती है या ऐसा चोरी से खा लेती है तो उसको दूसरी योनि में बिल्ली की योनि प्राप्त होती है। अब मान लो कि एक व्यक्ति ने चोरी की और उसके फलस्वरूप उसको वह योनि प्राप्त हुई, जहाँ उसको चोरी से खाना पड़ता है। तो फल कैसे हुआ? क्योंकि फल उसको कहा जाता है कि जहाँ व्यक्ति को डीप रियलाइजेशन हो कि यह कर्म गलत था, यह कर्म मुझे नहीं करना चाहिए था। तब तो उसके संस्कारों में परिवर्तन आएगा लेकिन

अगर उसको वही योनि मिली या हिंसक कर्म किया, इसलिए हिंसक योनि में जाना पड़ा उसको, तब वहाँ उसके संस्कार परिवर्तन होंगे या हिंसा के संस्कार और दृढ़ बनेंगे? सोचने की बात है!

साथ में हम देखते हैं कि मान लो कि सारे फल भोग करके 84 लाख योनियों से गुजर कर फिर जब मानव बनता है तो मनुष्य हर

पशु-पक्षी योनि में तो खाली शारीरिक भोगना होगी। आज पशु-पक्षियों को कोई टेंशन तो नहीं है। और मनुष्य को जितनी टेंशन होती है उस हिसाब से कितना टेंशन में जीता है। मनुष्य इतना ही नहीं शारीरिक भोगना, मानसिक भोगना और इमोशनल अत्याचार, अनेक प्रकार की भोगनाओं से गुजरता है...

रिति से संपूर्ण होना चाहिए ना! लेकिन कोई बच्चा जन्म से ही लूला, लंगड़ा, अंधा, बहरा पैदा होता है। अब जन्मते ही उसने कौन-सा कर्म किया? जन्मते ही तो ऐसा कोई कर्म नहीं हुआ ना, जिसकी वजह से ऐसे पैदा हुए।

आज की दुनिया में तो यहाँ तक सुनने को मिलता है कि एक बच्चा गर्भ में है और गर्भ में उसके ऊपर ऑपरेशन किया जा रहा है। अब जो बच्चा पैदा ही नहीं हुआ, जीवन का आरंभ ही नहीं किया तो उसके पैदा होने से पहले ही इतनी भोगना, इतनी यातना से गुजरना यह कौन से कर्म का फल है? पूर्व

जन्म के कर्म का फल कहें तो वो भोग करके आया न कि 84 लाख योनियों से गुजर के। आज हम देखते हैं कि एक बच्चा गोल्डन स्पून इन माउथ है तो दूसरे बच्चे को दूध भी नसीब नहीं होता। जन्मते ही यह दोनों बच्चों के अंदर इतना अंतर क्यों है? यही कहेंगे कि कर्मों की गति अति गूढ़ है।

आज हम आपको ये स्पष्ट कर दें कि किसी भी मनुष्य की आत्मा हर योनि में नहीं जाती, मनुष्य की आत्मा मनुष्य योनि में ही जाती है और उसी में रहकर अपने कर्मों का फल भोगती है। दूसरी बात, हम यह क्यों समझें कि पशु योनि या पक्षी योनि भोगना की योनि है। आज पक्षियों को देखो मस्त गगन में उड़ते हैं, कौन-सी भोगना है उसको? ऊँचे गगन में आकाश में उड़ रहे हैं, मौज कर रहे हैं। और मनुष्य को देखो, मनुष्य योनि में कितने प्रकार की भोगनाएं हैं। पशु-पक्षी योनि में तो खाली शारीरिक भोगना होगी। आज पशु-पक्षियों को कोई टेंशन तो नहीं है। और मनुष्य को जितनी टेंशन होती है उस हिसाब से कितना टेंशन में जीता है। मनुष्य इतना ही नहीं शारीरिक भोगना, मानसिक भोगना और इमोशनल अत्याचार, अनेक प्रकार की भोगनाओं से गुजरता है तभी तो मनुष्य कभी-कभी इतना तंग हो जाता है कि जीवन का अंत करने का सोच लेता है, सुसाइड कर लेता है। कभी सुना हमने कोई पशु या पक्षी ने सुसाइड किया? नहीं ना! वह तो खुश है अपनी योनि में। तो भोगना की योनि कौन-सी है? मनुष्य योनि पशु-पक्षी से भी कई गुना अधिक भोगना की योनि है। इसलिये आज के बाद हम यह न समझें कि यह भोगना कि योनि है।

- क्रमशः



चेन्नई। साउथवेस्टर्न अमेरिकन यूनिवर्सिटी की ओर से राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. मोनिका दीदी, छोटा उदेपुर, गुज. को विशेष रूप से ट्राइबल एरिया में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए 'डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी इन सोशल वर्क' के सर्टिफिकेट एवं मेडल से जज जे.हरीदोस, डिस्ट्रिक्ट जज चेन्नई, चिन्नी जेयन्थ, साउथ इंडियन फिल्म एक्टर प्रोड्यूसर डायरेक्टर, अरुलमणि, एसडब्ल्यूएयू एडवाइजर, फिल्म एक्टर, जुलिया मोरोजोवा, वास्तु शास्त्र रशिया एवं डॉ. वेद प्रकाश ययाती, फाउंडर एंड प्रेसिडेंट, रियल हैडसम वेलफेयर फेडरेशन आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियों के द्वारा सम्मानित किया गया।



येवला-महा। मराठी फिल्म डायरेक्टर गोवर्धन दोलतडे, फिल्म अभिनेता रोहन पाटील, अभिनेत्री दर्शनी दाभाडे, सह कलाकार कार्तिक दोलतडे व उनकी टीम को सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ हैं ब्र.कु. नीता बहन तथा अन्य।



धिलार्ड-छ.ग। ब्रह्माकुमारीज द्वारा से.7 स्थित पीस ऑडिटोरियम में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित समर कैम्प के चौथे दिन को आत्मविश्वास दिवस के रूप में मनाया गया। इस मौके पर दुर्ग शहर के आईपीएस ऑफिसर एसपी अभिषेक पल्लव, ब्र.कु. आशा बहन, सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।



इंदौर-गंगोत्री विहार(म.प्र.)। गर्मी की छुट्टियों में बच्चे कुछ क्रिएटिविटी के साथ अच्छी एक्टिविटी भी सीखें, इसी उद्देश्य से ब्रह्माकुमारीज एवं इंदौर पुलिस के दिशा निर्देश में पुलिस परिवार के बच्चों के लिए समर कैम्प का आयोजन किया गया।



जिंदूर-महा। अंतर्राष्ट्रीय कामगार दिवस के अवसर पर नगर पालिका के मजदूरों के लिए आयोजित कार्यक्रम में पूर्व नगराध्यक्ष प्रताप देशमुख, पूर्व नगराध्यक्ष सचिन गोरे, संभाजी ब्रिगेड के अध्यक्ष बालाजी शिंदे, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुमन बहन की उपस्थिति में मजदूरों का सम्मान किया गया।



राजनांदगांव-छ.ग। ब्रह्माकुमारीज द्वारा वन विभाग के कर्मचारियों के लिए आयोजित पाँच दिवसीय 'राजयोग शिविर' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए जिला वन मंडलाधिकारी बहन सलमा फारुखी, ब्र.कु. पूजा बहन, ब्र.कु. महिमा बहन, ब्र.कु. झालम भाई तथा वन विभाग के अधिकारी राहुल देव।



नेपाल-काठमाण्डू। नेपाल के माननीय प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल प्रचण्ड एवं उप प्रधानमंत्री व रक्षा मंत्री पूर्ण बहादुर खड्का के साथ ज्ञानचर्चा करने, ब्रह्माकुमारीज के द्वारा नेपाल में हो रही विविध ईश्वरीय सेवाओं से अवगत कराने एवं संस्थान के मुख्यालय माउण्ट आबू में होने वाले ग्लोबल सम्मिट का निमंत्रण देने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ हैं ब्रह्माकुमारीज काठमाण्डू नेपाल की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी। साथ हैं ब्र.कु. मेनुका, ब्र.कु. रामसिंह, ब्र.कु. तिलक तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



इंदौर-म.प्र.। कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत से मुलाकात कर आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् उनके साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, ब्र.कु. अनीता दीदी, ब्र.कु. उषा दीदी तथा अन्य।



बारडोली-गुज.। स्नेह मिलन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. चंद्रिका दीदी, डॉ. राहुल देसाई, बैंक मैनेजर शरद जोशी, विनय भाई, हीतेश भाई तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।



रीवा-झारिया(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'आध्यात्मिक प्रज्ञा से स्वर्णिम भारत' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में डॉ. प्रभाकर चतुर्वेदी, भारतीय रेडक्रॉस सोसायटी के चेयरमैन, डॉ. एस.के. पांडे, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी एवं शाहिद परवेज मध्य प्रदेश यूथ होस्टल एसोसिएशन के संरक्षक, राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय निदेशिका, ब्र.कु. नम्रता बहन तथा अन्य भाई-बहनें शामिल रहे। इस मौके पर नशा मुक्त भारत अभियान के नोडल निदेशक एवं ब्रह्माकुमारीज के स्थानीय मुख्य प्रवक्ता राजयोगिनी ब्र.कु. प्रकाश भाई ने उपस्थित जनसमूह से नशा मुक्त समाज बनाने में सहभागी बनने की प्रतिज्ञा करवाई।



बिलासपुर-छ.ग.। योग भवन, व्हीआईपी रोड रायपुर में छत्तीसगढ़ योग आयोग द्वारा आयोग के गठन की छठवीं वर्षगांठ पर आयोजित योग प्रशिक्षण शिविर में अष्टांग योग के महत्त्वपूर्ण अंग 'ध्यान' पर व्याख्यान के लिए ब्रह्माकुमारीज बिलासपुर टिकारपारा सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी को आमंत्रित किया गया। इस मौके पर देश के प्रथम योग आयोग की प्रथम महिला सदस्य ब्र.कु. मंजू दीदी एवं ब्र.कु. प्रीति बहन का स्वागत रविकांत कुम्भकार, डॉ. लहजा एवं छवि ने गुलदस्ता श्रीफल व शॉल भेंट कर किया।



विजयवाड़ा-आ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के यूनिवर्सल पीस रिट्रीट सेंटर, नेकल्लू, अमरावती विजयवाड़ा द्वारा 10 से 15 साल तक के बच्चों के लिए 'हैप्पी चिल्ड्रेन फेस्ट' एक दिवसीय रिट्रीट का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों को मनोरंजन के साथ विभिन्न एक्टिविटीज कराई गई तथा राजयोग मेडिटेशन से परिचित कराया गया। 15 अलग-अलग स्कूलों से लगभग 370 बच्चों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। विजयलक्ष्मी जी, प्रिंसिपल ऑफ एसवीआर इंग्लिश मीडियम स्कूल तथा ट्रेजरर और ओबीएचए स्कूल्स डिविजन, ब्र.कु. शांति दीदी तथा अन्य भाई-बहनें इस मौके पर उपस्थित रहे। नागार्जुन यूनिवर्सिटी के कोच ने बच्चों का विभिन्न खेलों के माध्यम से मनोरंजन किया।

क्या आप ज़मीन पर बैठते हैं?



शरीर को थोड़ा-सा आगे की ओर ले जाएं और वापस मूल स्थिति में आ जाएं। इस बार-बार होने वाली क्रिया से पेट की मांसपेशियां सक्रिय हो जाती हैं, जिससे पेट के एसिड का स्राव बढ़ जाता है और भोजन को तेज़ी से पचाने में मदद मिलती है।

जमीन पर बैठना एक तरह की शारीरिक कसरत है। हमने इस आदत को छोड़ दिया है इसलिए इससे होने वाले फायदों से भी अनजान हैं।

उठने और बैठने से

रक्त प्रवाह बढ़ता है

जमीन पर सुखासन में बैठने से शरीर में रक्त संचार बढ़ता है और नसों को शांत करता है। जब हम ज़मीन पर बैठते हैं तो शरीर और हृदय पर कम दबाव पड़ता है। सुखासन में रक्त प्रवाह पूरे शरीर में वितरित होता है।

पीठ के लिए अच्छा है

फर्श पर बैठने से अस्थिपंजर को ताकत मिलती है। मुद्रा और रीढ़ की सेहत में सुधार होता है। पीठ दर्द से राहत मिलती है। बैठने से न केवल तत्काल स्वास्थ्य लाभ होता है, बल्कि यह कई मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक कारकों में भी मदद करता है।

आराम मिलता है

जमीन पर बैठना दिमाग को आराम देने में भी प्रभावी है। तनाव दूर होता है। यह थकान और शरीर की कमजोरी को कम करने में भी मदद करता है।

पाचन में सहायक

जमीन पर सुखासन में बैठने से पाचन क्रिया बेहतर होती है। थाली को सामने की ओर ज़मीन पर रखें और खाने के लिए

जमीन पर बैठने का एक अलग ही सुकून है। आपने भी महसूस किया होगा कि हम कितने भी थके हुए हों, ज़मीन पर बैठने पर कितना आराम मिलता है। परंतु अब लोग ज्यादातर काम कुर्सी पर बैठकर ही करते हैं। मेज और कुर्सियों के उपयोग में आने से पहले लोग ज़मीन पर बैठकर ही भोजन किया करते थे। अब आदत छूट चुकी है इसलिए अगर कभी बैठते भी हैं तो पैरों में दर्द होने लगता है, ज़मीन चुभती है या शरीर अकड़ जाता है। परंतु ज़मीन पर बैठने से शरीर और स्वास्थ्य दोनों दुरुस्त रहते हैं।

वजन कम होता है



मुम्बई-गोराई(बोरीवली वेस्ट)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित बच्चों के छः दिवसीय 'समर कैम्प' के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. पारल बहन, ब्र.कु. कविता बहन, प्रो. दिनेश कुमार यादव, अध्यक्ष समाजवादी पार्टी मुम्बई तथा प्रतिभागी बच्चे।



रीवा-देवतालाब(म.प्र.)। मध्य प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष गिरिशी गौतम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लता बहन। साथ हैं एसडीएम मऊगंज ए.पी. द्विवेदी तथा अन्य गणमान्य लोग।



पहले खुद के अन्दर शक्ति भरें... फिर औरों को दें

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

आज हर किसी को ध्यान (मेडिटेशन) की जरूरत है। बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिए माता-पिता की आत्मा रूपी बैटरी पूरी तरह चार्ज होनी चाहिए। यह बच्चों के नजदीक बैठने से या उनके साथ ज्यादा वक्त बिताने भर से नहीं हो जाएगा। आप दूर बैठकर भी अपनी बैटरी चार्ज करके उनको वो शक्ति दे सकते हैं। कभी भी मन ये बहाना न बनाए कि मुझे घर पर ध्यान रखना है। बच्चों का ध्यान रखना है, मेरे पास मेडिटेशन करने का वक्त नहीं है। ध्यान तो रखना है, लेकिन सबसे पहले उनके मन का ध्यान रखना है।

आजकल घरों में इतना कुछ हो रहा है कि परिवार वाले अपना सारा धन लेकर डॉक्टर के पास पहुंच जाते हैं और कहते हैं मेरा सारा पैसा ले लो, पर बच्चे का दिमाग ठीक कर दो। डॉक्टर कहेगा कि ये काम पैसों से नहीं होता है। आज बच्चों के अन्दर जितना तनाव और चिंता है, उसका मूल कारण घर का वातावरण है और कोई कारण नहीं है। आप कितने भी बहाने देते रहो कि प्रतिस्पर्धा है स्कूल में। जबकि सच ये है कि पहले प्रेशर ज्यादा था अब कम है। पहले साधन नहीं थे अभी कितने साधन हैं। पहले हमने अगर क्लास में सुन लिया तो मिस हो गया।

फिर आज पहली कक्षा के बच्चे को टयूशन क्लास में भेजते हैं। पहले के दौर में कोई टयूशन जाता था, तो छुपाते थे। माना जाता था कि पढ़ाई में आप कमजोर हो, तभी टयूशन जाना पड़ता है। आजकल तो टयूशन क्लास लगा लो, क्यों? बस, सब लगाते हैं टयूशन क्लास।

इससे यह पता चलता है कि आत्मा की एकाग्रता की शक्ति घटती जा रही है। जो अव्वल आ रहे हैं वो भी टयूशन ले रहे हैं। और ऐसे कर-कर के हम उनको पास कराके अच्छे पेशे में तो भेज देंगे, लेकिन आत्मा के लिए क्या करेंगे फिर! इसलिए अपने आपको यह कभी भी नहीं कहना कि हमारे पास समय नहीं है क्योंकि मुझे अपने बच्चों का ध्यान रखना है। फिर उसके

ज्ञान हमें यह नहीं सिखाता कि हम किसी से दूर हो जाएं। आध्यात्मिक ज्ञान हमें यह सिखाता है कि खुद के अंदर शक्ति भरके वो शक्ति औरों को कैसे दें।

बाद बच्चों के बच्चों का ध्यान रखना है। यह सिलसिला चलता रहेगा। इसका कोई अंत ही नहीं है। लेकिन ऐसे करते-करते आत्मा शरीर छोड़ कर खुद बच्चा बन जाएंगे। क्या लेकर जाएंगे अपने साथ?

अगर थोड़ा-सा समय निकालकर शक्ति न कमाएं तो अपने बच्चों को शक्ति कैसे देंगे! तो अब ये बहाना न बनाएं कि हमारे पास समय नहीं है। बच्चों के साथ हम बहुत समय बिता सकते हैं, साधन भी सारे दे सकते हैं लेकिन शक्ति खुद कमाए बिना नहीं दे सकते हैं। जब आप देखेंगे तो आपको लगेगा सब तो ठीक है। एक दिन वो चेंज होता है सबकुछ। इसलिए कुछ भी होने से पहले अपने घर के वातावरण को बदलिए।

पहले लोग कहते थे ऑफिस में बड़ा तनाव

आता है, घर आकर सब ठीक हो जाता है। अब तो पता नहीं चलता उनको कौन-सा तनाव ज्यादा है। घर वाला या ऑफिस वाला। पहले बोलते थे सोमवार से शुक्रवार बहुत तनाव रहता है। रविवार बहुत अच्छा लेकिन अब कहते हैं संडे ज्यादा अच्छा नहीं, ऑफिस ही ज्यादा अच्छा। लॉकडाउन मिला था घर पर परिवार को इकट्ठे रहने के लिए। एक महीना तो बहुत अच्छा बीता, अगले महीने के बाद कब ऑफिस शुरू होगा। कब हम यहाँ से जाएं। कितने सालों से प्रार्थना की थी कि कब ऐसा दिन आएगा जब हम घर में साथ-साथ बैठेंगे। जैसे ही मिला बस-बस अब हमको बाहर जाना है यहाँ से। यह संकेत है कि पहले तनाव कामकाज की जगह पर होता था अब तनाव घर पर भी होने लग गया। जब घर पर भी होने लग गया तो उसके बाद आत्मा कहाँ जाएगी! इसलिए घर के वातावरण को बहुत शक्तिशाली बनाने की जरूरत है।

जब घर में से एक सदस्य भी रोज आध्यात्मिक ज्ञान की खुराक लेना शुरू करता है, भले एक ही व्यक्ति करे। एक के मन पर भी अगर ज्ञान के शब्द चल रहे हैं, तो घर की हवा में फैलनी शुरू हो जाएगी वो उस घर में रहने वाले सदस्य के मन पर स्वतः चली जाएगी। ध्यान रखें, अगर डर और चिंता फैलती है, तो ज्ञान और शक्ति भी फैलती है।

हमारे घर बड़े और सुन्दर बन गए, पर अब चाहिए शक्तिशाली घर। ऐसा घर जिसमें परिवार का सदस्य प्रवेश करे तो उसे सुकून और शक्ति मिले, कलह-क्लेश, तनाव और चिंता नहीं। घर के बाहरी रूप से सुंदर दिखने पर काम कर लिया, अब अंदरूनी सुंदरता पर काम करें।



खरगोन-म.प्र.। कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री कमल पटेल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. देवकन्या बहन, ब्र.कु. मनीषा बहन एवं भाजपा के पूर्व विधायक बाबूलाल महाजन।



इंदौर-प्रेम नगर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के अनुभूति भवन सेवाकेन्द्र द्वारा होमी भाभा सभागार,कन्वेंशन सेंटर,आरआरसीएटी इंदौर में 'मैनेजमेंट ऑफ माइंड, मेमोरी एंड मेडिटेशन' विषय पर लेक्चर कम मेडिटेशन सेशन को मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शक्तिराज भाई,माउण्ट आबू ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम में गिरधर मूंदड़ा,अति विशिष्ट वैज्ञानिक, डॉ. गुरविंदर जीत सिंह,वैज्ञानिक अधिकारी,एच., डॉ. जी. हरिदास,वैज्ञानिक अधिकारी,जी., डॉ. दीपांकर नंदा,वैज्ञानिक अधिकारी,जी., डॉ. मनोज सिंह,वैज्ञानिक, ब्र.कु. शशि दीदी,संचालिका,इंदौर पश्चिम क्षेत्र प्रेमनगर सहित 300 लोग शामिल रहे।



एंटीगुआ-बरबुडा। मिसेज रोजा ग्रीनावे,परमानेंट सेक्रेटरी ऑफ मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन, स्पोर्ट्स एंड क्रिएटिव इंडस्ट्रीज से उनके ऑफिस में स्कूल्स, यूनिवर्सिटीज एवं देश को मूल्य शिक्षा से परिचित कराने एवं जोड़ने के उद्देश्य के साथ ऑफिशियल मीटिंग के पश्चात् चित्र में उनके साथ एंटीगुआ और बरबुडा में ब्रह्माकुमारीज की नेशनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. डॉ. पायल बहन तथा अन्य।



इंदौर-लोकमान्य नगर(म.प्र.)। शासकीय स्वशासी अष्टांग आयुर्वेद कॉलेज में 'प्रशासनिक कार्य में तनाव प्रबंधन' कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में इंदौर प्रेम नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शशि दीदी, मुख्य वक्ता डॉ. दिलीप नलगे, प्रिंसिपल डॉ. अजीत सिंह चौहान, डॉ. अखिलेश भार्गव सहित अन्य स्टाफ मौजूद रहे।



भिलाई-छ.ग.। 'मन की बात' की 100वीं कड़ी(एपिसोड) के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी अपने विचार व्यक्त करते हुए। साथ में मंचासीन हैं भिलाई प्रेस क्लब की अध्यक्ष भावना पाण्डे, बीएसएफ के कमाण्डेंट मनीषा सिन्हा तथा अन्य अतिथिगण।



बैकुंठपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज के शिक्षा प्रभाग द्वारा छठवीं से ग्यारहवीं तक के छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित छः दिवसीय निःशुल्क 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' में छात्रों का सफलता की नींव आत्मविश्वास, आंतरिक सौंदर्य, अपनी आवाज सुनो, आज्ञाकारिता, हमारे विचार जीवन का आधार, नकारात्मक भावनाओं पर विजय आदि विषयों पर मार्गदर्शन किया गया। साथ ही विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन और एक्टिविटीज कराई गई। कार्यक्रम को सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रेखा बहन द्वारा सम्बोधित और संचालित किया गया। प्रतियोगिताओं में विजेता एवं बेहतर प्रदर्शन करने वाले बच्चों को सीता यादव प्रिंसिपल, ललिता सिंह पार्षद पुलिस लाइन, वरुण बारिक लिटिल मिलेनियम स्कूल के डायरेक्टर, कल्याणी मैडम, मंजू गुप्ता मैडम, अंजना साय मैडम के द्वारा पुरस्कृत किया गया।



भाटापारा-छ.ग.। बच्चों के लिए आयोजित 'दिव्य मुस्कान समर कैम्प' के समापन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सुशील शर्मा,अध्यक्ष,कृषि उपज मंडी, प्रशांत गांधी,अध्यक्ष,शाला विकास एवं प्रबंधन समिति, ब्र.कु. मंजू बहन, ब्र.कु. प्रभा बहन तथा ब्र.कु. भावना बहन। कैम्प के दौरान बच्चों के दिव्य मुस्कान को बनाए रखने एवं उन्हें मानसिक, शारीरिक व आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाने के लिए अलग-अलग विषयों जैसे एकाग्रता, भयमक जीवन, जीवन मूल्य, मैजिक ऑफ मेडिटेशन जैसे अनेक विषयों पर प्रकाश डालते हुए रचनात्मक एक्टिविटीज कराई गई। इनमें विशेष रूप से ममता गुप्ता, योगिता तिवारी, सुनीता राठौर, डॉ. विकास आदिल ने भयमक जीवन, आर्ट एंड क्राफ्ट, हेल्थ एंड हाइजीन पर अपने अनुभव युक्त विचारों द्वारा बच्चों को अनेक बातें सिखाई।



सिकंदराबाद-वेस्ट मरेडपल्ली। ब्रह्माकुमारीज द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित त्रिदिवसीय समर कैम्प में मोबाइल थैरेपी, साउण्ड थैरेपी, वॉटर थैरेपी, नेचर थैरेपी, कॉम्पिटिशन, मेडिटेशन, योगा सेशन, एक्सरसाइज सहित विभिन्न एक्टिविटीज कराई गई। तथा विजेता बच्चों को सिकंदराबाद सबजोन इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू दीदी, लैम्को ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज के चेयरमैन कौंडल राव, इंडियन स्पोर्ट्स ओनर रवि मदान, राजयोगी ब्र.कु. सुहास भाई तथा राजयोगी ब्र.कु. एन.एस. रेड्डी भाई की उपस्थिति में पुरस्कृत किया गया। समर कैम्प में लगभग 100 बच्चों ने भाग लिया तथा 50 अभिभावक भी शामिल रहे।

परमात्म ऊर्जा

कथा सरिता

अवसर मिलने पर वे विवेकानंद के पास आये

और उनसे नम्रतापूर्वक पूछा- आपने

- मेरा मस्तिष्क अपने ही कार्यों में इतना अधिक व्यस्त था कि आप लोगों की बात सुनी भी पर उन पर ध्यान देने और उनका बुरा मानने का अवसर ही नहीं मिला। स्वामी जी का यह जवाब सुनकर अंग्रेजों का सिर शर्म से झुक गया और उन्होंने चरणों में झुककर उनकी शिष्यता स्वीकार कर ली।

फोकस लक्ष्य पर ही हो



हम लोगों की बातें सुनी। आपने बुरा माना होगा?

स्वामी जी ने सहज शालीनता से कहा

सीख:- इस कहानी से ये सीख मिलती है कि हमें सदैव अपने लक्ष्य पर फोकस करना चाहिए।

एक बार एक लार्क चिड़िया जंगल में गाना गा रही थी। तभी एक किसान उसके पास से कीड़ों से भरा एक सन्दूक

तुम कहाँ जा रहे हो?

किसान ने जवाब दिया कि उस सन्दूक में कीड़े हैं, वो बाज़ार में उन

मैं अपना एक पंख तोड़ कर तुम्हें दे दूँगी और उसके बदले में आप मुझे कीड़े दीजिए। इससे मुझे कीड़े नहीं तलाशने पड़ेंगे।

किसान ने लार्क चिड़िया को कीड़े दिए और लार्क ने उसके बदले में उसे अपना एक पंख तोड़ कर दे दिया। उसके बाद रोज यही सिलसिला चलता रहा और एक ऐसा दिन भी आया, जब लार्क के पास देने के लिए कोई पंख नहीं बचा था।

अब वह उड़ कर कीड़े तलाशने लायक नहीं रह गई, और अब वो भूखी दिखने लगी और उसने गाना छोड़ दिया और फिर जल्दी ही वह मर गई।

सीख:- यही बात हमारी जिंदगी के लिए भी है। कई बार हमें जो रास्ता आसान लगता है, वही बाद में मुश्किल साबित होता है।

लार्क चिड़िया



लेकर गुजरा। लार्क चिड़िया ने उसे रोक कर पूछा, तुम्हारे सन्दूक में क्या है और

कीड़ों के बदले पंख खरीदने जा रहा है। लार्क ने कहा, पंख तो मेरे पास भी हैं।

निरन्तर देह का भान भूल जाए- उसके लिए हरेक यथा शक्ति नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार मेहनत कर रहे हैं। पढ़ाई का लक्ष्य ही है देह अभिमान से न्यारे हो देही अभिमानी बनना। देह अभिमान से छूटने के लिए मुख्य युक्ति यह है सदा अपने स्वमान में रहो तो देह अभिमान मिटता जायेगा। स्वमान में स्व का भान भी रहता है अर्थात् आत्मा का भान। स्वमान- मैं कौन हूँ! अपने इस संगमयुग के और भविष्य के भी अनेक प्रकार के स्वमान जो समय प्रति समय अनुभव कराये गये हैं, उनमें से अगर कोई भी स्वमान में स्थित रहें तो देह अभिमान मिटता जाए। मैं ऊँच ते ऊँच ब्राह्मण हूँ- यह भी स्वमान है। सारे विश्व के अन्दर ब्राह्मण और विश्व का मालिक बनने वाली मैं आत्मा हूँ- यह भी स्वमान है। जैसे आप लोगों को शुरू-शुरू में देह के भान से परे होने का लक्ष्य रहता था, मैं आत्मा पुरुष हूँ- इस पुरुष के स्वभाव में स्थित कराने से स्त्रीपन का भान नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार निकलता गया। ऐसे ही सदैव अपनी बुद्धि के अन्दर वर्तमान व भविष्य स्वमान की स्मृति रहे तो देह अभिमान नहीं रहेगा। सिर्फ शब्द चेंज होने से स्वमान से स्वभाव भी अच्छा हो जाता है। स्वभाव का टक्कर होता ही तब है जब

एक दो को स्व का भान नहीं रहता। तो स्वमान अर्थात् स्व का मान, उससे एक तो देह अभिमान समाप्त हो जाता है और स्वभाव में नहीं आयेगा। साथ-साथ जो स्वमान में स्थित होता है उनको स्वतः ही मान भी मिलता है। आजकल दुनिया में मान से स्वमान मिलता है ना। कोई प्रेजिडेंट है, उनका मान बड़ा होने के कारण स्वमान भी ऐसा मिलता है ना! स्वमान से ही विश्व का महाराजन बनेंगे और उनको विश्व सम्मान देंगे। तो सिर्फ अपने स्वमान में स्थित होने से सर्व प्राप्ति हो सकती है। इस स्वमान में स्थित वह रह सकता है जिनको, जो अनेक प्रकार के स्वमान सुनाये, उसका अनुभव होगा। "मैं शिव शक्ति हूँ" - यह भी स्वमान है। एक होता है सुनना, एक होता है उस स्वमान स्वरूप का अनुभव। तो अनुभव के आधार पर एक सेकण्ड में देह अभिमान से स्वमान में स्थित हो जायेंगे। जो अनुभवीमूर्त नहीं हैं, सिर्फ सुनकर के अभ्यास करते ही रहते हैं। लेकिन अनुभवी अब तक नहीं बने हैं, उन्हीं की स्टेज ऐसे ही होती है। एक अपने स्वमान की लिस्ट निकालो तो लिस्ट बड़ी है। उन एक-एक बात को लेकर अनुभव करते जाओ तो माया की छोटी-छोटी बातों में कमजोर नहीं बनेंगे।



पारडी-गुज। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र में बच्चों के समर कैम्प के उद्घाटन अवसर पर शहर के प्रमुख डॉ. एम.एम. कुरेशी, डॉ. देवांगी देसाई, एडवोकेट धर्मीन शाह, ब्र.कु. पारल बहन, ब्र.कु. मीनल बहन, ब्र.कु. विनु भाई, शिविर शिक्षक ब्र.कु. मितल बहन, ब्र.कु. सोनम बहन आदि उपस्थित रहे।



रायपुर-चौबे कॉलोनी(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज के विश्व शांति भवन में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित 'समर कैम्प' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए बायें से ब्र.कु. सविता दीदी, स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. मुकेश कुमार वर्मा, सूचना आयुक्त अशोक अग्रवाल, आईएसएस तथा ब्र.कु. स्मृति बहन।



अलीराजपुर-म.प्र.। जिला कारागृह में 'जीवन जीने की कला' विषय पर कैदियों को सम्बोधित करने के पश्चात् जेल अधीक्षक श्रीमति संस्कृता को सेवांजलि भेंट करते हुए ब्र.कु. नारायण भाई एवं ब्र.कु. माधुरी बहन।

ब्रह्माकुमारीज ने व्हीलचेयर क्रिकेट प्रीमियर लीग के खिलाड़ियों का सम्मान कर बढ़ाया उत्साह



माउण्ट आबू। ब्रह्माकुमारीज दिव्यांग सेवा और लायन्स क्लब, सुमेरपुर हिल्स, लायन्स क्लब, माउण्ट आबू के संयुक्त तत्वाधान में इतिहास में पहली बार व्हीलचेयर क्रिकेट प्रीमियर लीग का उमंग-उत्साह के साथ पोलो क्रिकेट ग्राउण्ड, माउण्ट आबू में आयोजन हुआ। ब्रह्माकुमारीज की अति. मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयन्ती दीदी, यूरोपियन सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी, महिला प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. डॉ. सविता बहन, मल्टीमीडिया चीफ ब्र.कु. करुणा भाई, दिव्यांग सेवा प्रभाग के संयोजक ब्र.कु. सूर्यमणि भाई, ब्र.कु. मोहन भाई आदि सभी खिलाड़ियों से मिले और ईश्वरीय सौगात देकर सम्मानित किया। साथ ही अपने आशीर्वचनों द्वारा सभी में उमंग-उत्साह का संचार किया। लायन्स क्लब अध्यक्ष पंकजराव मेवारा अपने परिवार सहित कार्यक्रम में शामिल हुए। पोलो ग्राउण्ड में प्रीमियर लीग के विधिवत उद्घाटन में स्थानीय विधायक संयम लोढ़ा, मल्टीपल चेयरमैन संजय भण्डारी, लायन्स के सभी सदस्य एवं ब्रह्माकुमारीज के सदस्य शामिल हुए। सभी व्हीलचेयर क्रिकेट खिलाड़ियों ने ब्रह्माकुमारीज संस्थान, शांतिवन की तरफ से प्रदान की गई व्यवस्था, आयोजन व सुविधाओं के लिए दिल से आभार प्रकट किया।

ज्ञानसरोवर परिसर में मीडिया प्रभाग द्वारा 'राष्ट्रीय विकास में मीडिया का दायित्व' त्रिदिवसीय सम्मेलन सत्यता के साथ खड़ी हो पत्रकारिता : प्रो. द्विवेदी

ज्ञानसरोवर-माउण्ट आबू। भारतीय जनसंचार संस्थान के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि मीडिया को सत्य के मार्ग पर चलते हुए सामाजिक बुराइयों को उजागर करना चाहिए। पत्रकारिता जब सत्यता के साथ खड़ी होती है तो दुनिया की कोई ताकत उसे हरा नहीं सकती। ब्रह्माकुमारीज संगठन ने मीडिया को स्वतंत्र आकाश उपलब्ध कराया है जो सदैव सकारात्मक पहलुओं को महत्व देकर आध्यात्मिकता के माध्यम से विश्व को एकसूत्र में पिरोने का अतुलनीय कार्य कर रहा है। यह बात प्रो. द्विवेदी ने ब्रह्माकुमारीज के ज्ञानसरोवर परिसर में संगठन के मीडिया प्रभाग द्वारा 'राष्ट्रीय विकास में मीडिया का दायित्व' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में कही। सोशल मीडिया के प्रसार की चुनौतियों की चर्चा के साथ प्रो. द्विवेदी ने बापू गांधी के तीन उपदेशों को नया रूप देते हुए कहा कि यदि बुरा ना टाड़ो करो, ना लाइक करो और ना ही शेयर करो का सिद्धांत अपनायेंगे तो सोशल मीडिया अपने आप सुधर जायेगा। इंडिया टूडे दूर संचार संस्थान के निदेशक डॉ. ध्रुव ज्योति पाटी ने कहा कि डिजिटल मीडिया की चुनौतियों के बावजूद प्रिंट मीडिया को लोकतंत्र के

विकास में संवेदनशील भूमिका निभाते रहना चाहिए। बफरिंग मीडिया टेक निदेशक व सहसंस्थापक अमित बी वाधवानी ने कहा कि दुनिया को बेहतर मार्ग दिखाने के लिए मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्मों का सदुपयोग करना चाहिए। ब्रह्माकुमारीज संगठन की

को सकारात्मक रखने के साथ जनहित को सर्वोपरि मानते हुए मौलिक अधिकारों की रक्षा के दायित्व पर खरा उतरना चाहिए। संगठन के मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. करुणा भाई ने कहा कि सत्यता को हर मानव तक पहुंचाने से पूर्व मीडियाकर्मियों को स्वयं



संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी ने कहा कि राष्ट्रीय विकास की भागीदारी में मीडिया को अपना सकारात्मक रखना चाहिए। नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता से परोसने का कार्य किया जाना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय पहलवान व बॉलीवुड अभिनेता संग्राम सिंह ने कहा कि वर्तमान समय बच्चों को संस्कारों की शिक्षा देने में मीडिया को आगे आना चाहिए। अपनी सोच

में ईश्वर की शक्ति को आत्मसात करना चाहिए। प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. शान्तनु भाई ने कहा कि कई समस्याएं आध्यात्मिकता के मार्ग पर चलने से अपने आप सुलझ जाती हैं। शिक्षा प्रभाग की उपाध्यक्षा ब्र.कु. शीलू बहन ने सभी को राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया तथा मीडिया प्रभाग की क्षेत्रीय संयोजिका ब्र.कु. चंद्रकला बहन ने मंच का संचालन किया।

पढ़ाई के साथ अच्छे संस्कार भी देने हैं : ब्र.कु. शिवानी

फरीदाबाद से.21डी-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज की ओर से एवं एचपीएससी की ओर से फरीदाबाद के स्कूल से डायरेक्टर, प्रिंसिपल, टीचर्स लगभग 1200 लोग 'हरियाणा प्रोग्रेसिव

संस्कार भी देने हैं। आज के समय बच्चे टीचर्स की बात को ज़्यादा फॉलो करते हैं इसलिए हर बच्चे को पढ़ाई के साथ-साथ संस्कारों पर भी मार्क्स देना शुरू करेंगे तो बच्चे अच्छे संस्कारों पर भी ध्यान देना शुरू करेंगे और फिर अच्छे संस्कार से अच्छा संसार बनेगा। टीचर्स को कभी भी बच्चों से इरिटेट नहीं होना है। प्यार से उनके अच्छे गुणों की तारीफ करनी है और प्यार से समझाना है क्योंकि अच्छे संस्कार देने की ज़िम्मेदारी टीचर्स की भी है। कार्यक्रम में प्रमोद श्योराण आईआरएस, डिप्टी कमिश्नर सीजीएसटी ने अपने जीवन में राजयोग के अभ्यास से प्राप्त हुए अनुभव को सभी के साथ साझा किया और शिवानी बहन का धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम की भूरी-भूरी प्रशंसा की। इस मौके पर एस.एस. गुप्तेन एचपीएससी स्टेट प्रेसिडेंट, सुरेश चन्द्र वाइस प्रेसिडेंट एवं विपिन राव एचपीएससी जनरल सेक्रेटरी विशेष रूप से उपस्थित रहे। ब्र.कु. उषा बहन एवं ब्र.कु. प्रीति बहन ने सभी को ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित किया।



स्कूल्स कॉन्फ्रेंस' के दौरान 'स्पीरिचुअलिटी इज द सेवियर ऑफ ह्यूमैनिटी' कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी दीदी ने बताया कि हमें स्कूल-कॉलेज के अंदर पढ़ाई के साथ-साथ अच्छे

कर्मशील व्यक्ति कभी वृद्ध नहीं होते : ब्र.कु. गंगाधर



वरिष्ठ नागरिकों के लिए हुआ आयोजन

हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)।

ब्रह्माकुमारीज के शान्ति भवन सेवाकेन्द्र में जनमंच संस्था के संयुक्त तत्वाधान में 'खुशहाल बुजुर्ग-खुशहाल समाज' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में माउण्ट आबू से आये ओमशान्ति मीडिया के संपादक ब्र.कु. गंगाधर भाई ने कहा कि व्यक्ति विचारों से वृद्ध होता है। कर्मशील व्यक्ति कभी वृद्ध नहीं होते। भारत का तमाम सदसाहित्य आत्मदर्शन और आत्मचिंतन की बात करता है। आत्मा न तो युवा होती है न तो वृद्ध, लेकिन शरीर के प्रभाव में आने पर बाल, किशोर, युवा, प्रौढ़ और वृद्ध का अनुभव करती है। उन्होंने कहा कि युवाओं और बुजुर्गों के मध्य होने वाली संवादहीनता का कारण एक-दूसरे को न समझ पाना होता है। चरखी दादरी से आई ब्र.कु. प्रेम बहन ने आत्मदर्शन और चिंतन के लिए राजयोग का अभ्यास कराया और कहा कि जीवन का चाहे कोई भी प्रहर हो लेकिन स्वयं को निमित्त मात्र समझकर चलने से जीवन में खुशहाली रहेगी ही। ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा संचालित संगठन 'दिशा' सदस्य कुशल पाल सिंह

पौरुष ने कहा कि संस्था बुजुर्गों को सरकार से प्राप्त होने वाली विभिन्न योजनाओं में आने वाली कठिनाइयों में मदद करने के लिए सदैव तत्पर है। पी.सी. बागला महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. एस.सी. शर्मा ने कहा कि बुजुर्गों के पोषण, मनोरंजन पर ध्यान देना चाहिए जिससे वह स्वस्थ रहकर समाज को अपने अनुभवों से लाभ दे सकें। भारतीय नागरिक कल्याण एवं अपराध निरोधक समिति के सचिव अधिवक्ता हरीश शर्मा ने भी अपने अमूल्य विचार रखे। ब्र.कु. दिनेश भाई ने कहा कि वृद्धजनों को वृद्धजन नहीं वरदजन समझें। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शान्ता बहन ने सभी वरिष्ठ नागरिकों का आभार व्यक्त कर उन्हें पीतवस्त्र, सौगात एवं साहित्य देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर अरविंद गुप्ता, दाऊदयाल अग्रवाल, रमेश दीक्षित, रामदेव गौतम, रामगोपाल, कमलेश देवी, मुनीशा देवी, एडवोकेट गीता शंकर मिश्र, डॉ. बी.पी. सिंह वशिष्ठ, चौधरी बच्चू सिंह, डॉ. गणेश चन्द्र वशिष्ठ, डॉ. जीतेन्द्र स्वरूप शर्मा फौजी सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पेंशनर एसोसिएशन अध्यक्ष अमृत सिंह पौनिया ने की।

श्रेष्ठ विचारों से बनेगा तनावमुक्त खुशहाल जीवन



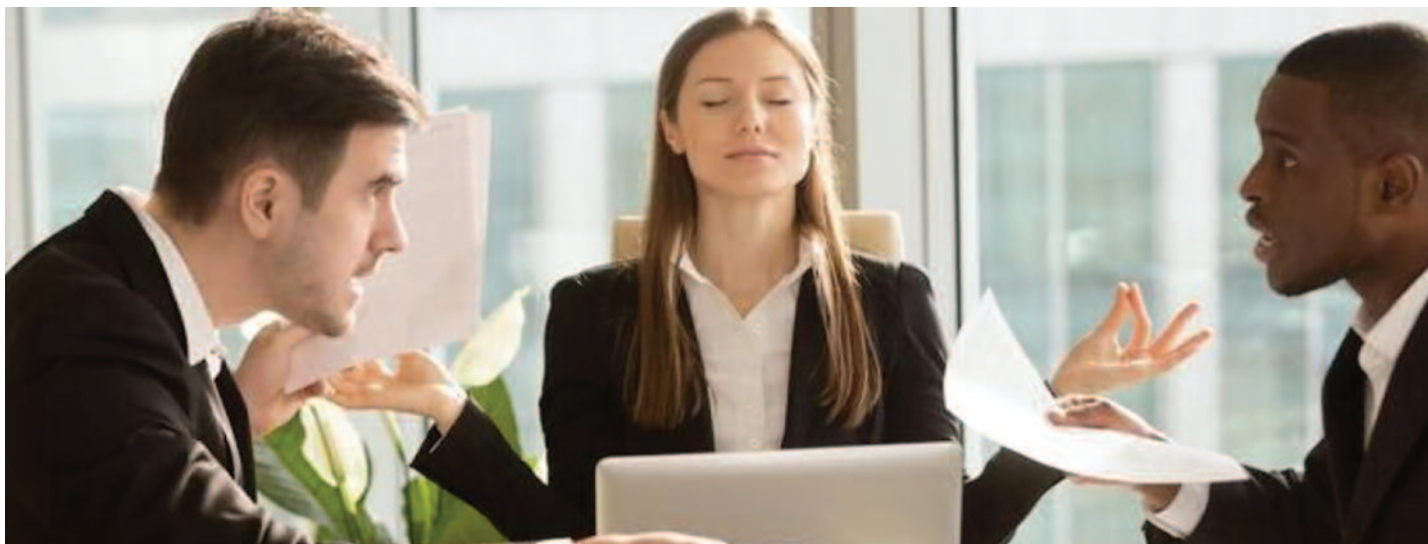
नौ दिवसीय 'अलविदा तनाव' निःशुल्क शिविर का शुभारंभ

दुर्ग-छ.ग.। जो कुछ हम बार-बार सोचते हैं वैसे हमारा जीवन बनता जाता है। हमारे साथ होने वाली हर घटना के लिए हमारे हर संकल्प ज़िम्मेदार हैं। उक्त विचार इंदौर से आई प्रख्यात तनाव मुक्ति

विशेषज्ञा राजयोगिनी ब्र.कु. पूनम बहन ने ब्रह्माकुमारीज के राजर्षि भवन द्वारा पुरानी गंज मंडी, गंजपारा में आयोजित नौ दिवसीय 'अलविदा तनाव' निःशुल्क शिविर के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किये। उन्होंने तनाव से मुक्त खुशहाल रहने के लिए कहा कि सोने से दो घंटे पूर्व ही मोबाइल, कम्प्यूटर इत्यादि इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से दूर हो जायें व

सुबह उठने के दो तीन घंटे बाद ही इनका प्रयोग करें तो निश्चित सफलता मिलेगी। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीटा बहन ने सभी का स्वागत करते हुए बताया कि ब्रह्माकुमारी संस्था दुर्ग शहर में विगत 40 वर्षों से मानव मात्र की सेवा में तत्पर है। अरुण वोरा विधायक व चेयरमैन, वेयर हाउसिंग कॉर्पोरेशन, महापौर धीरज बाकलीवाल तथा कमल नारायण रंगटा अध्यक्ष, नागरिक सहकारी बैंक, दुर्ग ने भी शिविर के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। कार्यक्रम में कैलाश रंगटा, अध्यक्ष छत्तीसगढ़ राइस मिल एसोसिएशन, संतोष रंगटा, चेयरमैन रंगटा ग्रुप ऑफ कॉलेजेस तथा हजारों की संख्या में शहर के गणमान्य जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. रुपाली बहन ने किया।

» सबके लिए भाव और सभी का बदले स्वभाव «



हम जब योगी जीवन अपनाते हैं तो सभी कहीं न कहीं किसी न किसी सेवाकेन्द्र से अवश्य जुड़ते हैं। सभी की मानसिक और शारीरिक अवस्था अलग-अलग है। सबकी दृष्टि, वृत्ति, कृति अलग-अलग है। सबकी सोच का दायरा अलग है। इसलिए सबको प्राप्ति भी अलग-अलग है। जब कभी हम शुरु

में परमात्मा के साथ जुड़ते हैं, योग लगाते हैं तो उस समय योग हमारा जल्दी से लग जाता है। लेकिन धीरे-धीरे जब हम सबके संपर्क में आने लग जाते हैं, सब से मिलते-जुलते हैं तो हम उस योग की अनुभूति को करने में सक्षम नहीं होते जो पहली बार किया था। ऐसा क्यों, ऐसा इसलिए कि पहले जब आप

परमात्मा से जुड़े तो वहां आप किसी को नहीं जानते थे तो आपका जाकर वहां पर योग लग गया। धीरे-धीरे जब लोगों से जुड़े, भले उस परिवार को हमने अपना माना, लेकिन उसके बाद निरंतर हममें कमी होती गई या नहीं होती गई ये हमें सोचना है। ऐसा क्यों हुआ, क्योंकि हमने वहां सबको देखना शुरू किया और

हमारी सोच बदल गई। यदि हमारे भाव सिर्फ और सिर्फ परमात्मा के घर के लिए हों तो घर में आने वाले सारे सदस्यों के लिए होगा लेकिन अगर सिर्फ सदस्यों के लिए होगा, तो हो सकता है कि कुछ से हो, कुछ से न हो। इसलिए हमारे भाव हर दिन, हर पल, हर क्षण बदल रहे हैं और बदलते रहेंगे। इसलिए जब

तक हमारे
भाव में
आत्मिक
भा । व ,
परमात्मा के
घर के लिए
भा । व ,
परमात्मा के
एक - एक
चीज़ के लिए



» ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

चीज के लिए
भाव, परमात्मा के घर में रहने वाले निमित्त
के लिए भाव नहीं होंगे तब तक योग लगना
मुश्किल है। तो कहा जाता है कि आये थे
हरि भजन को, ओटन लगे कपास। जिस
लक्ष्य को लेकर आये थे कि हमको भगवान
मिल गया, उससे योग लगाकर मैं मास्टर
भगवान बनूंगा, वो स्थिति कहीं इधर-उधर
चली गई। इसलिए बिना भाव रखे आपका
स्वभाव नहीं बदलेगा। जो कहीं भी आता है,
जाता है, शिव परमात्मा से जुड़ा हुआ है,
उसको वहां के प्रति भाव खुद में भी बिठाना
है, औरों के अंदर भी बिठाना है। तब जाकर
के योग लगेगा। यही है भाव और स्वभाव
का अप्रतिम मिलन।

मतलब जो कुछ भी हमारे अंदर बदलाव का आधार है, वो सिर्फ और सिर्फ भाव ही है। और वो आता है सहज तरीके से सभी को परमात्मा का बच्चा मानने तथा उसी हिसाब से उनके साथ व्यवहार करने से। और ये हम सबको गाँठ बांध लेनी है।

उपलब्ध पुस्तकें



जो आपके जीवन को बदल दे



प्रश्न : मैं तसनीम नागपुर से हूँ। मैं 26 साल की मेरिड वुमेन हूँ। मैं रात को सो नहीं पाती हूँ और जब सोने की कोशिश करती हूँ तो मन में कई प्रकार के विचार आने शुरू हो जाते हैं। क्या करें?

उत्तर : ब्रेन को तो रेस्ट चाहिए ही। ब्रेन भी तो एक मशीन जैसे ही है ना ! अगर मशीन को 24 घंटे चलाते रहो तो वो गर्म हो जायेगा, तार जल जायेगा। कुछ भी नुकसान हो जायेगा। इसलिए रेस्ट ब्रेन को बहुत आवश्यक है। बाँडी के सभी अंग जो निस दिन एक्टिव हैं उन्हें भी रेस्ट देना परम आवश्यक है। इसलिए आपके सब्कोन्शियस माइंड में वो भर गया है कि नींद के बिना भी काम चल सकता है। तो सब्कोन्शियस माइंड आपको सोने नहीं दे रहा है। तो अब आप इस संकल्प को डिलीट करें। कैसे करेंगे? सोने के वक्त जब आप सोने जायें तो तब संकल्प करेंगे कि मुझे 6 घंटे नींद की बहुत आवश्यकता है। मुझे अपने ब्रेन को रिएनर्जेटिक करने के लिए 6 घंटे नींद की जरूरत है। अब मैं गहरी नींद सो जाऊंगी। कुछ दिन ये करेंगी तो आपका सब्कोन्शियस माइंड इसे स्वीकार कर लेगा और पिछला जो अन्दर भर गया था वो डिलीट हो जायेगा। ये आपको ज़्यादा से ज़्यादा 21 दिन तक करना होगा। और हमारे यहाँ बहुत सारी सीडीज़ बनी हुई हैं वो अच्छे से सुन लें और सुनते-सुनते आप सोने लगें। तो गुड थॉट जो आपके माइंड को मिलेंगे उससे जो कोई निगेटिव थॉट आता होगा वो समाप्त हो जायेगा। और अगर सुनने की मार्जिन नहीं है, कोई चीज़ नहीं मिली तो हमारे यहाँ ईश्वरीय महावाक्यों की कुछ किताबें बनी हुई हैं या आपकी जो मन पसंद किताबें हैं

जिनसे आपका चिंतन बहुत पॉज़िटिव हो जाये उनको थोड़ी भी देर पढ़ेंगी तो चिंतन होते-होते आपको नींद आ जायेगी। तीसरी चीज जो हम सिखाते हैं कि अगर और कुछ न हो तो शांति में बैठकर 108 बार लिख लें कि मैं एक महान आत्मा हूँ, मैं महान हूँ, मैंने अनेक जन्म देवकुल में लिए हैं, मैं महान हूँ। इसे स्वीकार करके लिखना प्रारम्भ करें। तो लिखते-लिखते ही नींद आने लगेगी। पाँच-सात दिन के बाद ऐसा लगेगा कि

मन की बातें



- राजयोगी ब्र.कृ. सूरज भाई

लिखते-लिखते ही नींद आ गई। इससे क्या होता है मैं एक महान आत्मा हूँ ये स्वमान है हमारा, तो आत्मा से गुड एनर्जी ब्रेन को जायेगी और वो ब्रेन को पूरी तरह से रिलेक्स कर देगी और नींद आ जायेगी।

प्रश्न : मेरा नाम नीरज अग्रवाल है। मैं फार्मसी कॉलेज में एसिसटेंट प्रोफेसर हूँ। मैं ब्रह्माकुमारीज के ज्ञान को भी फॉलो करता हूँ। मुझे ढेर सारे सपने आते हैं जब मैं सोता हूँ। मेरा मन सुबह-सुबह बहुत उत्तेजित हो जाता है। मैं सुबह अमृतवत्ता करने के लिए जल्दी उठने की कोशिश करता हूँ, लेकिन नींद कमप्लीट न होने की वजह से मैं मेडिटेशन के लिए नहीं बैठ पाता हूँ। कृपया बतायें क्या करूँ?

उत्तर : कभी-कभी ऐसा होता है कि

किसी स्थान पर, किसी कमरे में बैड एनर्जी बहुत होती है। मान लो कुछ गलत काम हो गया वहाँ पर, किसी ने सुसाइड कर लिया, कुछ गंदे काम वहाँ हो गये हैं। या लोग वहाँ बैठकर सट्टा खेलते थे तो वहाँ निगेटिव एनर्जी, निगेटिव वायब्रेशन्स फैले रहते हैं। तो ऐसी जगह पर भी मनुष्य को नींद नहीं आती। दो तरीके हैं या तो आप रूम चेंज कर लें या फिर वहाँ कुछ धूप, अगरबत्ती जलायें, वहाँ का वातावरण वैरीफाय हो। और एक विशेष मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ स्वमान के साथ विशेष मेडिटेशन करें। आधा घंटा सुबह और आधा घंटा शाम को ताकि वहाँ की बैड एनर्जी समाप्त हो जाये। और फिर वही चीज़ रोज़ रात को सोने से पहले अपने सब्कॉन्शियस माइंड में भरें।

पाँच बार संकल्प करेंगे कि आज मुझे गहरी नींद आयेगी। आज मुझे स्वप्न रहित गहरी नींद आयेगी। आज मैं अपनी गहरी नींद को बहुत एन्जॉय करूंगा। ऐसे करते-करते सो जायें। और फिर सब्कॉन्शियस माइंड इसे एक्सेप्ट करेगा। फिर दूसरी विधि आप ये भी अपना सकते हैं कि कोई अच्छी क्लास जो आपको प्रिय हो, ईश्वरीय महावाक्यों की भी सीडी है, कोई भी क्लास है, योग की कॉर्मेंट्री है उसको चला दें और फिर चलते-चलते आपके विचार उसी तरह के होते रहेंगे। और कोई भी जो व्यर्थ संकल्प होगा वो समाप्त हो जायेगा। क्योंकि जिसको नींद नहीं आती उसको यही संकल्प काफी भारी हो जाता है कि नींद नहीं आ रही, नींद नहीं आ रही। फिर कुछ और संकल्प भी आ सकते

हैं। आगे-पीछे की याद आने लगेगी। तो कोई क्लास या कॉमेडी सुनने से बहुत अच्छा होगा। और तीसरी चीज़ मैं एक महान आत्मा हूँ, इसे 108 बार लिखें। चौथी चीज़ भी मैं सजेस्ट करूँगा। सोने से पहले थोड़े ठण्डे पानी से नहा लिया जाये ताकि बॉडी कूल हो जाये। और एक बात मुझे याद आ रही है अगर आपके पास कोई हो या सभी हमारे जो दर्शक हैं वो भी इस बात को जान लें कि उल्टा लेट जायें और रीड की हड्डी के दोनों ओर किसी से धीरे-धीरे दबाव लें। ऊपर से नीचे दबा लें, तो रिलेक्स हो जायेंगे। दोनों तरफ ही पूरा तंत्र है ना! वो कहीं न कहीं स्ट्रेन(दबाव, चिंता) उसमें आ जाता है। टैशन जैसी हो जाती है। उसको पाँच-सात, दस बार दबा लें। इससे जब रिलेक्स हो जायेंगे तो नींद भी जल्दी आयेगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल





वरिष्ठ
राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

हम हार न मान जायें, क्योंकि पॉजिटिव चिंतन ही हमारे उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करेगा। सबसे महत्वपूर्ण चीज तो यह है कि हमें अपनी बुद्धि का विकास करना है। इसके लिए विद्यार्थियों को मैं कहता हूँ कि सवेरे उठकर यह स्थूल प्रैक्टिस भी करनी है, जब भी आप उठो, जल्दी उठेंगे तो

बहुत होती है। कई बच्चे सुनाते हैं कि हमें तो सब याद था लेकिन हम सब गड़बड़ कर आए। हमें कोई जल्दीबाजी नहीं करनी है एकदम धैर्यपूर्वक, शांतिपूर्वक। एगजाम से पहले यह नहीं सोच लेना कि बहुत कम समय है क्वेश्चन बहुत हैं, नहीं तो व्यर्थ

विद्यार्थियों की समस्याएँ और उनका समाधान

और अच्छा इफेक्ट होगा। उठते ही 5 बार संकल्प करें मैं बुद्धिमान हूँ, एकदम विश्वास से कि मैं बुद्धिमान हूँ, मैं जो पढ़ूँगा या पढ़ूँगी मुझे सब याद रहेगा, मैं बुद्धि की मालिक हूँ, बुद्धि पर मेरा कंट्रोल है- हे बुद्धि जो मैं पढ़ूँ सबको ग्रहण कर लेना तो देखना कितना अच्छा रिजल्ट होगा। तो न तो नर्वस होना, न कमजोर पड़ना। ऐसे नहीं एगजाम देने के

संकल्पों की रफ्तार शुरू हो जाएगी और एगजाम देने के बाद यह भी नहीं सोचना कि पता नहीं रिजल्ट कैसा आयेगा! आप अपने रिजल्ट को भी अब से ही वायब्रेशन देने शुरू कर दो और वायब्रेशन जायेंगे आपकी पॉजिटिव थिंकिंग से। मेरा एगजाम क्लियर हो गया है। कम्प्यूटर देख रहे हैं, मेरा नम्बर लिखा हुआ है। एक बात और जो बहुत इम्पोर्टेंट है- एक लड़के ने बी.ए. कर लिया, बी.टेक. कर लिया। तब कोरोना भी आ गया था तो 6 साल हो गये। नौकरी भी नहीं मिली। फिर उसके फादर की कोरोना से मृत्यु हो गई तो उसे क्लेरिकल जॉब मिल रही थी। अब मेरे पास मिलने आया और मुझसे पूछा अभी मैं क्लर्क बनूँ? है तो गवर्नमेंट की जॉब लेकिन मुझे लोग क्या कहेंगे कि बी.टेक. करके बाबू बन गया। लेकिन 6 साल से कोई रोजगार नहीं। मन पर कितना बुरा असर पड़ता है। इसलिए लोग क्या कहेंगे इस बारे में सोच-सोच कर ज्यादा निगेटिव, व्यर्थ, चिंतायें यह सब नहीं पालनी हैं। मैंने उसे कहा कि अब तुम्हें मिल रहा है ना तो 1 साल के लिए ही ज्वाइन कर लो, छोड़ना तो अपने हाथ में होता है। और दूसरी तरफ अच्छी तैयारी करो। साथ ही साथ और कहीं भी एप्लाई भी कर दो। आपका मन शांत स्थिति में आ जाएगा और वहीं जॉब में आपको कुछ पैसा भी मिलेगा, आपका टाइम भी सफल होगा।

विद्यार्थी जीवन बड़ा ही नाजुक जीवन होता है। उस समय पर उन्हें जो राह दिखायेंगे वो उसी राह पर चलने लगेंगे। इसलिए इस जीवन में सही राह चुनने के लिए, सही राह बताने के लिए, जीवन को अच्छा बनाने के लिए सही व्यक्ति का संग और सही गाइड की अति आवश्यकता होती है।

लिए बैठे पेपर हॉल में, अब बैठ तो गये लेकिन लंबा-चौड़ा पेपर देखकर घबरा गये। पहले 1-2 क्वेश्चन देखकर मान लो नहीं आते तो मन घबराता है। बच्चों में नर्वसनेस आती है। छोटी आयु होती है- कोई 20 साल का, कोई 22 साल का। थोड़ा-सा स्टेबल करें अपने को। 15 सेकंड शांत में बैठ जाएं। शिवबाबा जो सुप्रीम फादर है उसे याद करें। तुम हमारे साथ हो, बुद्धिमानों के बुद्धिमान, बुद्धि दाता हो तुम। सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है यह संकल्प करो। फिर शांत भाव से लिखना शुरू करें। नर्वसनेस से शुरू करते हैं फास्ट गति चला देते हैं मन की, तो गड़बड़

समय पर मनुष्य को जो कुछ मिले उसको लेकर आगे बढ़ जाना चाहिए। इससे एक द्वार खुला है फिर आगे बढ़कर हो सकता है चार द्वार खुले हुए और नजर आ जाएं तो निराशा के द्वार बंद करके बहुत पॉजिटिव रहते हुए, स्वयं को मुक्त करके सभी विद्यार्थी अपनी मनोस्थिति अच्छी बनाएं। याद रखेंगे आपका मन जितना सुंदर विचारों में होगा सफलता उतनी आपके पीछे परछाई की तरह आएगी।

हमारा जीवन बहुत मूल्यवान है। वैसे भी हमारे देश में तो यह पहले से ही मान्यता रही कि मनुष्य जीवन सभी जीवों में सर्वश्रेष्ठ है, है ही। बुद्धि है, मन है, टैलेंट्स है। यह और जीव-जन्तुओं में थोड़ा ही है। हमें अपने जीवन को वैल्यू देनी है। हम बहुत खुश रहें, हमारे जीवन में शांति ही शांति हो। तनाव, परेशानियाँ, चिंतायें न हों, बहुत प्रेम हो परिवारों में। सारी दिनचर्या हमारी बहुत सुंदर हो, अपनापन हो। यही तो सुंदर जीवन है ना! इसमें अगर किसी के मन में व्यर्थ संकल्प बहुत चलते हैं- स्वार्थ आ जाए। स्वार्थ बहुत बुरी चीज है। अनेक व्यर्थ संकल्प इससे बढ़ जाते हैं। परिवार में ही कोई अपना, अपना शत्रु बनने लगे तो संकल्पों की झड़ी लग जाती है। परिवारों में संबंधों को वैल्यू देना, मेल-मिलाप को वैल्यू देना, हमारा परिवार एक रहे इसको वैल्यू देना बहुत आवश्यकता है।

अब आगे हम विद्यार्थियों की बात ले रहे हैं। 'स्टूडेंट लाइफ इज द बेस्ट' ये कहावत तो आपने सुनी ही है। और मैं कह रहा हूँ डायमंड लाइफ। इसमें मनुष्य अपने व्यक्तित्व यानी पर्सनेलिटी का भी निर्माण करता है, वो अपने पूरे जीवन के बीज डालता है इसमें। सफलता, असफलता कैसा करियर रहेगा, खुशी में जीवन बीतेगा या चिंताओं में बीतेगा। छोटी-छोटी बातों में टेन्शन होगी या खुशनुमा रहेगे तो इन सबका आधार है हमारा सुंदर चिंतन। पॉजिटिव भी, प्युअर चिंतन भी, कहीं पॉवरफुल थिंकिंग भी, जो ज्ञान-योग के मार्ग पर चलते हैं वो इस शब्द को अच्छी तरह समझते हैं। हमें पॉजिटिव थिंकिंग पर ध्यान देना है। हमारी थिंकिंग पॉवरफुल भी हो ताकि हम निराशा ना हों,



गांधीधाम-भारत नगर(गुज.)। मातृ दिवस के उपलक्ष्य में 'स्वस्थ एवं सुखी परिवार में माताओं की भूमिका' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता बहन, ब्र.कु. वासुदेव भाई तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों सहित 60 से अधिक मातायें शामिल रहीं।



बिजावर-छतरपुर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'जल जन अभियान' के अंतर्गत स्वास्थ्य विभाग सर्टई में डॉक्टर एवं नर्सों को जल की उपयोगिता का संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. शिल्पा बहन, बीपीएम श्रीमति अनीता चंदेल, एमपीएससी शेख अब्दुल समद, डीईओ कोल खरे तथा समस्त स्टाफ।



छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज एवं जल शक्ति मंत्रालय के संयुक्त तत्वाधान में 'जल जन अभियान' के तहत महोबा रोड स्थित शासकीय उत्कृष्ट सीनियर बालिका छात्रावास में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. सुमन बहन, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. कल्पना बहन व ब्र.कु. रीमा बहन ने सम्बोधित करने के साथ ही छात्राओं को विभिन्न प्रकार की एक्टिविटीज कराई।



पन्ना-म.प्र. मातृ दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए श्रीमति मीना पांडे, नगरपालिका अध्यक्ष, श्रीमति आशा गुप्ता, नगरपालिका उपाध्यक्ष, श्रीमति निशा जैन, पूर्व प्राचार्य, शास.उ.मा. विद्यालय पन्ना, श्रीमति मंजुलता जैन, एडवोकेट, ब्र.कु. सीता बहन, संचालिका पन्ना उपसेवाकेन्द्र तथा अन्य।



कामठी-महा. मुस्लिम समुदाय द्वारा रमजान ईद के उपलक्ष्य में 'ईद मिलन एवं कौमी एकता समारोह' में ब्रह्माकुमारीज द्वारा समाज में उत्कृष्ट योगदानों के लिए महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नानाभाऊ पटोले द्वारा स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता दीदी का सत्कार शॉल और प्रशस्ति पत्र देकर किया गया। इस मौके पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री विलास मुत्तेमवार, किशोर गजभिये, मुस्लिम वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष वजाहत मिर्जा, डॉ. सिद्दिकी, मुम्बई कृषि उत्पन्न बाजार समिति के संचालक हुकुमचंद आमधरे सहित कई राजनीतिक नेतागण व भारी संख्या में मुस्लिम समुदाय के भाई-बहनों उपस्थित रहे।



शिवाजी नगर-कर्नाटक। ब्रह्माकुमारीज के जगदम्बा भवन सेवाकेन्द्र के स्वर्ण जयंती महोत्सव पर आयोजित पीस कॉन्फ्रेंस में रिजवान अरशद, मेम्बर ऑफ द कर्नाटक लेजिस्लेटिव एसेम्बली, शंकर बिदारी, पूर्व डीजी एंड आईजीपी, डॉ. एस. बालाजी, स्टेट प्रेसिडेंट, कन्नड़ जनपद परिषद, श्रीनिवास राजू, चेयरमैन, व्यास इंटरनेशनल स्कूल, चेयरपर्सन राजयोगिनी ब्र.कु. सरोजा दीदी, ब्रह्माकुमारीज सबजोन इंचार्ज, कुमारा पार्क, राजयोगी ब्र.कु. सुरेन्द्रन, रिजनल कोऑर्डिनेटर, एजुकेशन विंग, ब्रह्माकुमारीज, ब्र.कु. पवित्रा बहन, राजयोग शिक्षिका, कम्पनहल्ली सेवाकेन्द्र संचालिका आदि शामिल रहे।



अलीराजपुर-म.प्र. ईशु दादी के द्वितीय पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में अंजू सिसोदिया प्रिंसिपल एकलव्य स्कूल, जितेंद्र तवर वरिष्ठ व्याख्याता, ब्र.कु. नारायण भाई, ब्र.कु. माधुरी बहन, रतन सिंह सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, भेरू सिंह सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक सहित अन्य भाई-बहनों उपस्थित रहे।



रायपुर-छ.ग. ब्रह्माकुमारीज के शान्ति सरोवर में बच्चों के लिए आयोजित समर कैम्प में 'राजयोग मेडिटेशन से एकाग्रता की शक्ति' विषय पर सम्बोधित करते हुए राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. किरण बहन।



डोभी-नरसिंहपुर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा श्रमिकों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. प्रीति बहन, पूर्व जिला सदस्य श्रीमति वंदना पटेल, ब्र.कु. पुरुषोत्तम भाई, केवल सिंह पटेल, श्रमिकों में सन्दीप जैन, हरिओम विश्वकर्मा, मोहन मिस्त्री, चन्द्रशेखर मिस्त्री, दानसिंह मिस्त्री सहित अनेकों श्रमिक भाई-बहनों मौजूद रहे। सभी का विशेष स्वागत और सम्मान किया गया।

मानव सभ्यता के संरक्षण के लिए प्रकृति संरक्षण आवश्यक



इंदौर-म.प्र.। विश्व पृथ्वी दिवस पर ब्रह्माकुमारीज के ज्ञान शिखर ओम शांति भवन में आयोजित कार्यक्रम में इंदौर जोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी ने कहा कि पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के कारण पृथ्वी पर हरियाली नष्ट होने से प्रकृति के तत्वों के बीच असंतुलन हो गया है, जिससे पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है। इसके निदान के लिए जनजागृति लाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही दीदी ने ज्ञानशिखर परिसर के सातवें वार्षिकोत्सव पर सभी को शुभकामनाएं दी। प्रख्यात पर्यावरणविद एवं संस्था सेवा सुरभि के कुमार सिद्धार्थ ने इस वर्ष के पृथ्वी दिवस की थीम 'इन्वेस्ट इन आवर प्लैनेट' के बारे में बताते हुए कहा कि हम मानव सभ्यता के संरक्षण के लिए आने

विश्व पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्य में हुआ कार्यक्रम

केक काटकर मनाया गया ज्ञान शिखर परिसर का सातवां वार्षिकोत्सव

मुम्बई से आये प्रसिद्ध गायक हरीश मोयल ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए सुंदर गीत प्रस्तुत किये

वाली पीढ़ी को ध्यान में रख प्रकृति संरक्षण के लिए निवेश करने की योजनाएं बनाएं। वन विभाग के उपमंडल अधिकारी कृष्णा निवाला ने कहा कि हम जीवन में एक पेड़ अवश्य लगायें और उसकी पालना करें। माउण्ट आबू से आये प्रेरक वक्ता ब्र.कु. शक्तिराज भाई ने ब्रह्माकुमारीज द्वारा पर्यावरण के क्षेत्र में चलाये जा रहे विभिन्न अभियानों से सभी को अवगत कराया। माउण्ट आबू के ब्र.कु. चेतन भाई ने भी अपने विचार रखे। प्रेम नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शशि बहन ने पर्यावरण की रक्षा एवं जल संरक्षण के लिए सभी से प्रतिज्ञा करवाई। शक्ति निकेतन छात्रावास की कुमारियों ने बहुत सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। ब्र.कु. आकांक्षा बहन ने गीत गाया। संचालन ब्र.कु. अनीता दीदी ने किया।

कार्यक्रम : माननीय मुख्यमंत्री ने राज्य में नशामुक्त छत्तीसगढ़ अभियान का किया शुभारंभ और कहा...

राज्य में नशामुक्ति के लिए अभियान की ज़रूरत

नशाखोड़ी एक सामाजिक बुराई, इस अभियान में राज्य प्रशासन हर संभव मदद को तैयार : मुख्यमंत्री बघेल

स्कूल और कॉलेजों में बच्चों को जागरूक करने की आवश्यकता : शर्मा

नशामुक्ति के लिए आंतरिक शक्ति आध्यात्मिकता से ही आएगी : गौतम



रायपुर-छ.ग.। भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय तथा ब्रह्माकुमारीज के संयुक्त तत्वाधान में 'नशामुक्त छत्तीसगढ़ अभियान' का शुभारंभ करने के पश्चात् माननीय मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने नशाखोरी को सामाजिक बुराई बताते हुए कहा कि नशामुक्त समाज बनाने हेतु ब्रह्माकुमारीज जैसी और भी संस्थाएं आगे आए तो सरकार की ओर से उन्हें हर संभव मदद दी जाएगी। आज समाज में शराबबंदी के बजाय नशामुक्ति के लिए अभियान चलाए जाने की ज़रूरत है। वरिष्ठ विधायक और राज्य में शराबबंदी लागू करने के लिए गठित समिति

के अध्यक्ष सत्यनारायण शर्मा ने कहा कि ईसान आत्म विश्वास की कमी के कारण नशे की लत को छोड़ नहीं पाता। अतः स्कूलों और कॉलेजों में ही बच्चों को जागरूक करने की आवश्यकता है। गृह सचिव अरुण देव गौतम ने कहा कि यह संस्थान आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर लोगों को नशामुक्त कर सकता है। क्योंकि नशामुक्ति के लिए आंतरिक शक्ति चाहिए जो कि आध्यात्मिकता से ही आएगी। माउण्ट आबू से आये ब्रह्माकुमारीज मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह ने कहा कि हमारा संस्थान राज्य सरकार के साथ मिलकर नशामुक्ति अभियान को सफल

बनाएगा। मुम्बई से आये डॉ. सचिन परब, इंदौर जोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी ने भी अपने महत्वपूर्ण विचार रखे। भिलाई सेवाकेन्द्र की निदेशिका ब्र.कु. आशा दीदी ने सामूहिक योगाभ्यास कराया तथा आभार प्रदर्शित किया। जगदलपुर की संचालिका ब्र.कु. मंजूषा दीदी ने बताया कि जगदलपुर में 65 आदिवासी ग्रामों में यह संस्थान राजयोग के द्वारा नशामुक्ति के लिए कार्य कर रहा है, जिससे हजारों परिवारों में खुशियां लौटी हैं। कार्यक्रम का संचालन धमतरी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता बहन ने किया।

शहर में ब्रह्माकुमारीज के नवनिर्मित 'शांति शिखर भवन' का उद्घाटन

सिवनी-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के नवनिर्मित 'शांति शिखर भवन' के उद्घाटन कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज रायपुर की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी ने बधाई देते हुए कहा कि विपरीत परिस्थितियों में भी जिसका मन स्थिर है, वास्तव में यही सच्ची शांति है। सिवनी के विधायक दिनेश राय मुनमुन ने कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनों का स्नेह और आशीर्वाद मुझे हमेशा से मिलता रहा है। यहां आकर बहुत सुकून मिलता है, शांति मिलती है। पूर्व सांसद नीता पटेरिया ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा निर्मित यह भवन हमारे जिले के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। यह भवन श्रेष्ठ समाज के निर्माण में अहम भूमिका निभाएगा। ब्र.कु. ज्योति बहन ने सभी शहर वासियों से अपील की कि सभी यहां प्रतिदिन आकर ध्यान साधना अवश्य करें। इस मौके पर माउण्ट आबू से महिला प्रभाग की संयोजिका डॉ. सविता दीदी, ब्र.कु. देव भाई, ब्र.कु. चेतन भाई सहित



108 राजयोगी ब्रह्माकुमार भाई, इंदौर, भिलाई एवं रायपुर से ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. सविता दीदी, बरघाट कुर्द क्षेत्र के विधायक अर्जुन काकोरिया सहित देश भर से करीब चार हजार भाई-बहनें उपस्थित रहे। कार्यक्रम में 30 मीडिया कर्मियों को भी सम्मानित किया गया। इंटरनेशनल मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शक्तिराज भाई ने कुशल मंच संचालन किया। ब्र.कु. गीता बहन ने सभी का आभार व्यक्त किया।

ब्रह्माकुमारीज के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा सीएआईटी ग्वालियर के पदाधिकारियों के लिए स्नेह मिलन एवं सम्मान समारोह

खुश रहना है... तो अपनी खुशी का रिमोट कंट्रोल अपने पास रखें

लश्कर-ग्वालियर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स ग्वालियर के पदाधिकारियों के लिए आयोजित 'स्नेह मिलन एवं सम्मान समारोह' को सम्बोधित करते हुए सीएआईटी ग्वालियर के अध्यक्ष दीपक पमनानी ने कहा कि आज हम व्यापारियों को मेडिटेशन की बहुत ज़्यादा ज़रूरत है। इसलिए संस्थान के व्यापार और उद्योग प्रभाग के सहयोग से कैट टीम के लिए कुछ न कुछ मेडिटेशन ध्यान के सत्र नियमित रूप से आयोजित करने का प्रयास करेंगे। संयुक्त अध्यक्ष मुकेश जैन ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्था कई सारे

प्रभागों के लिए कार्य करती है और उसमें भी मानव सेवा के लिए यह लोग विशेष रूप से कार्य करते हैं। वरिष्ठ उपाध्यक्ष गोपाल जैसवाल ने बताया कि मेडिटेशन हमारी एकाग्रता को, हमारे आत्म बल को बढ़ाता है। इस क्षेत्र में ब्रह्माकुमारीज संस्थान जो कार्य कर रहा है वो बहुत ही सराहनीय है। महामंत्री मनोज चौरसिया ने कहा कि जब हम कुछ अच्छा करते हैं तो अपने आप ही आंतरिक खुशी और शांति महसूस होने लगती है और कहीं न कहीं हम दुआओं के हकदार भी बनते हैं। ब्रह्माकुमारीज लश्कर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन ने कहा कि आज कहीं न कहीं हमारी खुशी, शांति

दूसरों पर निर्भर हो गई है कि यह खुश रहेंगे तो मैं खुश हूँ, ये मेरे हिसाब से चलेंगे तो मैं खुश हूँ या परिस्थिति मेरे अनुकूल है तो मैं खुश हूँ तो हमने अपनी

खुशी का रिमोट कंट्रोल दूसरों को थमा दिया है इसलिए आज मानसिक बीमारियां इतनी तेजी से बढ़ती जा रही हैं। अब हम ये संकल्प लें कि हम अपनी खुशी का

रिमोट कंट्रोल अपने पास रखेंगे। ऐसा करने पर जीवन जीने का आनंद ही कुछ और होगा। ब्र.कु. डॉ. गुरचरण भाई ने सभी का स्वागत व अभिनंदन किया एवं संस्थान का परिचय दिया। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ब्र.कु. प्रहलाद भाई ने किया। इस अवसर पर सीएआईटी के उपाध्यक्ष जे.सी. गोयल, मयूर गर्ग, संयुक्त सचिव अमित अरोरा, अंकेक्षक हरि ओम चौरसिया, प्रवक्ता नीरज चौरसिया, सोशल मीडिया प्रभारी प्रतीक अग्रवाल, कार्यसमिति सदस्य अजय चोपड़ा, कार्यकारिणी सदस्य दिनेश कुमार बंसल, श्रीमति साधना शांडिल्य, प्रिया दास सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



कार्यक्रम में सीएआईटी ग्वालियर के सभी पदाधिकारियों को दुपट्टा पहनाकर, स्मृति चिन्ह, ईश्वरीय सौगात व प्रसाद देकर सम्मानित किया गया।